चन्दामामा
जून १९६२
60
nP

डाबर
(डा.एस.के.बर्मन)
प्राइवेट लि॰
कलकत्ता
लालशर
(डाबर-बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

चन्दामामा

जून १९६२

LIFEBUOY
SOAP
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ !

जून १९६३

मुझे आप की "चन्दामामा" इतनी अच्छी लगती है कि मैं इसकी पूरी कहानियाँ खतम किये बिना चैन से नहीं रहता हूँ।

यदि आप पीछे के सात पृष्ठ और आगे के सात पृष्ठ बेकार न करे तो पृष्ठ की वृद्धि हो जायगी और हम बालक भी खुश हो जायेंगे।

रजनी रंजन सहाय, पटना

अप्रैल १९६३ में आप की पुस्तक में 'च्यवन की कथा', 'मुक्ति-शक्ति', 'भारत का इतिहास', 'कठिन परीक्षा' आदि रचनायें बहुत अच्छी लगीं। चन्दामामा के रंगों को बने चित्रों को देखकर मेरा हृदय मयूर की भाँति नाच उठता है।

जुगलकिशोर छगड़िया, आसाम

निसन्देह चन्दामामा पहले से अच्छी हो गई है किन्तु एक परिवर्तन मुझे भाया नहीं वह यह है पहले चन्दामामा का मुख पृष्ठ चिकने कागज में आता था परन्तु अब तो सादा में ही आता है।

कृष्णकान्त कुरड़िया, नई दिल्ली

मैं "चन्दामामा" की जितनी तारीफ करती हूँ उतनी ही कम है। मैं चाहती हूँ की चन्दामामा में चुटकले आदि भी छापा करे तो अच्छा होगा।

कुमारी विजयलक्ष्मी जैन, इन्दौर

‘फ़्लु’ से छुटकारा पाने के लिये

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल

लीजिये

सिर्फ़ दवाई ही नहीं है बल्कि विश्वसनीय टॉनिक भी है।

कई गुणों के इस वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड में ये चार गुण विशेष हैं जिनकी वजह से लोग कई पीढ़ियों से इसपर अधिक विश्वास करते आरहे हैं।

१. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड दवाई भी है और एक विश्वसनीय टॉनिक भी है। यह शरीर को शक्ति प्रदान करता है।

२. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड सर्दी-ज़ुकाम और खाँसी को दूर करके जल्दी आराम पहुँचाता है।

३. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड में 'क्रिओसाट' और 'गॉयकाल' नामक पदार्थ भी मिले होते हैं जो बलगम का नाश करके फेफड़ों को साफ़ करने में मदद करते हैं।

४. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड के उपयोग से शरीर के लिये आवश्यक धातुओं की कमी पूरी होती है, भूख ज़्यादा लगती है, ख़ून बढ़ता है और हाज़मा भी ठीक रहता है।

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल

वॉरनर-लैम्बर्ट फ़ार्मास्युटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व सहित यू.एस.ए. में संस्थापित)

कर्तव्य-
पालन में
सब से आगे...
जे.बी. मंघाराम एण्ड कं.
ग्वालियर और हैदराबाद
Satin
Royal Cream

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

"चन्दामामा" के बारे में हमारे पाठक प्रायः हमारे पास सुझाव भेजते हैं। कई बहुत अच्छे होते हैं।

हम सब अच्छे सुझावों को कार्यान्वित तुरत नहीं कर पाते हैं। कुछ हमारी भी कठिनाइयाँ हैं।

एक सुझाव था कि विज्ञान सम्बन्धी बातें दी जायें। विज्ञान तो बहुत ही व्यापक क्षेत्र है। हमने विज्ञान के बारे में काफी कुछ छापा है। आजकल हम एक पृष्ठ दे रहे हैं। हमें खुशी है कि पाठकों का एक सुझाव हम अमल में ला सके।

वर्ष: १४ जून १९६३ अंक: १०

भारत का इतिहास

नासिरुद्दीन के लड़के न थे। उसने मरते समय घियासुद्दीन बल्बन को अपना उत्तराधिकारी बनाया। बल्बन, तुर्किस्तान के इल्बरी जाति का था। जब वह लड़का ही था कि मंगोल उसको पकड़कर बगदाद ले गये। ख्वाजा जमालुद्दीन ने उसको गुलाम के तौर पर खरीदा। १२३२ वह अपने और गुलामों के साथ उसको दिल्ली लाया। उन सब गुलामों को उसने सुल्तान इल्तमश को बेच दिया। गुलाम बल्बन ने अपने सामर्थ्य के कारण प्रगति की। इसकी लड़की से १२४९ में स्वयं सुल्तान ने शादी की।

इल्तमश के मरने के तीस साल बाद बल्बन सुल्तान बना। इस बीच के काल में राज्य में बहुत-से परिवर्तन हो गये थे। खजाना करीब करीब खाली हो गया था। शासित शासकों की परवाह नहीं कर रहे थे। यही नहीं, मंगोलों के आक्रमण भी बढ़ते जाते थे। इन परिस्थितियों को बल्बन ने होशियारी से ठीक किया। सेना को उसने "मालिकों" के आधीन किया। उन डाकुओं को जो प्राण हानि, धन हानि, व्यापार में बाधा पहुँचाते थे, नष्ट करवा दिया। गोपालगिरि और जलाली नामक खतरनाक जगहों पर उसने किले बनवाये। सड़कों वगैरह पर चोर डाकुओं का भय जाता रहा।

पश्चिमी सीमा पर मंगोल के आक्रमण कर सकते थे। उन्होंने खलीफ़ा को मारकर बगदाद पर कब्जा कर लिया था। गज़नी में अपना राज्य स्थापित कर लिया था। पंजाब और सिन्ध प्रान्त पर भी उन्होंने हमला किया। मंगोलों का नेता

२०. गुलाम वंश का अन्त

अलमुतसिम था। बल्बन ने लाहौर के किले की, जिसे मंगोलों ने नष्ट कर दिया था, १२७१ में मरम्मत करवाई।

बल्बन के सम्बन्धी शेरखान सुंकर की पंजाब में कुछ जागीरें थीं। वह तब तक मंगोलों का मुकाबला करता आया था। इसको बल्बन ने ईर्ष्यावश विष देकर मरवा दिया। शेरखान के मरते ही मंगोल फिर सीमा पर आक्रमण करने लगे। इन आक्रमणों का सामना करने के लिए बल्बन ने अपने पुत्र शहजादे मुहम्मद को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त किया। अपने दूसरे लड़के बुग्राखान को सामान, सुनाम आदि जागीरें दीं। १२७९ में मंगोलों ने जब सतलज नदी पार करके आक्रमण किया तो सुल्तान के लड़कों और उनकी सेनाओं और दिल्ली की सेनाओं ने उनको पीछे हटा दिया।

उसी समय बंगाल के राजप्रतिनिधि तुग्रिलखान ने दिल्ली के विरुद्ध विद्रोह किया। शायद इसलिए कि सुल्तान वृद्ध था, या इसलिए कि पश्चिम में मंगोल आक्रमण कर रहे थे, या इसलिए कि दिल्ली बहुत दूर थी, तुग्रिलखान ने विद्रोह किया था। उसके सलाहकारों ने भी उसको उकसाया था।

बल्बन यह विद्रोह देख घबराया। अमीरखान के नेतृत्व में उसने बंगाल बड़ी सेना भेजी। युद्ध में अमीरखान हार गया। उसके बहुत से सैनिक शत्रुओं से घूँस लेकर उनमें जा मिले।

हारकर आने पर सुल्तान ने अमीरखान को मौत की सज़ा दी। १२८० में जब दूसरी सेना भेजी गई, वह भी विद्रोहियों द्वारा हरा दी गई।

तुग्रिलखान को सज़ा देने के लिए बल्बन स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व करता अपने लड़के बुग्राखान को साथ लेकर

लख्नौति पहुँचा। तुघ्रिल यह खबर पाते ही लख्नौति से जाज़ नगर के जंगलों में भाग गया। विद्रोहियों का पीछा करता बल्बन पूर्वी बंगाल में गया। आखिर तुघ्रिल को बाण से मारा गया। उसका सिर काटकर नदी में फेंक दिया गया।

१२८५ में मंगोलों ने पंजाब पर आक्रमण किया। बल्बन के बड़े लड़के ने उसका विरोध किया। उस साल मार्च ९ को मंगोलों ने उसको घेरकर मार दिया। ८० वर्ष का बूढ़ा बल्बन इस घटना पर ढह-सा गया। जब उसने अपने दूसरे लड़के बुग्राखान को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहा तो उसने इनकार कर दिया। इसलिए उसने अपने पोते कैखुस्रो को उत्तराधिकारी नियुक्त किया। बल्बन १२८७ के अन्त में मर गया।

बल्बन के बाद उसके कर्मचारियों ने कैखुस्रो को गद्दी पर न बिठाकर बुग्राखान के लड़के मुयजुद्दीन कैकुबाद को गद्दी पर बिठाया। इसकी उम्र १७ या १८ की थी। इसका बचपन नियन्त्रण में कटा था, इसलिए गद्दी पर बैठते ही, यह भोग विलास में मस्त हो गया। दिल्ली कोतवाल का निज़ामुद्दीन नाम का दामाद था। उसने राज्य अपने हाथ में कर लिया। शासन के लिए तुर्कियों और खिलजियों के बीच होड़ चली। मालिक जलालुद्दीन फिरोज के नेतृत्व में खिलजी ही जीते। कैकुबाद को मरवा दिया गया। और उसके शव को यमुना में डाल दिया गया। उसके छोटे लड़के को मारकर १२९० १३ जून को जलालुद्दीन फिरोज शा, खिलोखी के राजमहल में गद्दी पर बैठा।

दास्य-विमुक्ति

माँ से आकर कहा गरुड़ ने
"नहीं मुझे था ज्ञात,
इसीलिए दुख सहती अब तक
रही यहाँ दिन-रात ।

जान गया अब तेरे दुख का
कारण ही मैं मूल,
नारद जी हैं बता गये सब
चुभा हृदय में शूल ।

देख नहीं सकता मैं तुझको
बनी यहाँ पर दासी,
चैन भला हो कैसे सुत को
माँ की देख उदासी !

कद्रू ने माँगा है अमृत
जाता हूँ मैं लाने,
नहीं सहेगी तू अब माता
नित कद्रू के ताने ।

काम कठिन तो है सचमुच ही
लाना अमृत खेल नहीं,
किंतु रहूँगा बैठा डाले
कानों में मैं तेल नहीं ।

लाऊँगा ही अमृत मैं तो
तुझको मुक्त करूँगा,
देवराज भी रोकेंगे तो
उनसे युद्ध करूँगा !"

अश्रु पोंछकर विनता ने तब
सुत का माथा चूमा,
बोली—"बेटा, देख तुझे ही
दुख में भी मन झूमा ।

तेरे ही कारण तो अब तक
रह पायी मैं धीर,
रही छिपाये मैं दुर्दिन में
मन ही मन सब पीर ।

["भारतीभक्त"

देती हूँ आशीष तुझे मैं
रक्षक हों भगवान,
जा, अब भेंट पिता से कर ले
फिर करना प्रस्थान।"

सुनकर माँ के वचन गरुड़ने
अपने पंख पसारे,
उड़ा गगन में जैसे आँधी
आये मेघ-सहारे।

थरथर पर्वत लगे काँपने
तरुवर लगे उखड़ने
जीव-जन्तु सब सिमटे भय से
सागर लगा गरजने।

आनन-फानन में यों पहुँचा
गरुड़ पिता के पास,
ध्यान लगाये बैठे थे वे
तप कर विमल प्रकाश।

चरणों पर जा झुका गरुड़ वह
सिमटा अपनी पाँखें,
कश्यप मुनि ने शांत भाव से
खोलीं अपनी आँखें।

बोले—"बेटे, उमर बड़ी हो
रहे सदा सुख की ही छाया,
बनो यशस्वी निज कर्मों से
उज्ज्वल मन सा-काया!"

पाकर यह आशीश पिता का
गरुड़ हुआ अति धन्य,
कहा—"पिता जी, रहे कृपा ही
चाह नहीं कुछ अन्य।

जाता हूँ मैं स्वर्गलोक को
अमृत-घट अब लाने,
ले लूँ मैं आशीश आपका
यही कहा था माँ ने।

बनी हुई दासी कद्रू की
रही दुःख यह झेल,
पता आपको क्या, कद्रू ने
रचा भयानक खेल!

कुछ भी हो अब तो मैं अपनी
माँ को मुक्त करूँगा,
पुत्र कहाकर सच्चा जग में
जीवन धन्य करूँगा!"

बेटे की सुन बातें कश्यप
हुए बहुत गंभीर,
"पुत्र, असंभव अमृत लाना
यों मत बनो अधीर!"

कहा गरुड़ ने तभी—"पिता जी,
अमृत तो लाऊँगा ही मैं,
रहें आप निश्चित, सफलता
तो निश्चय पाऊँगा ही मैं।

लगी मुझे है भूख अभी तो
कहाँ मिलेगा कुछ खाने को,
भूख मिटाकर ही मैं अपनी
जाऊँगा अमृत लाने को!"

बेटे को तब लगा गले से
कश्यप जी ने कहा यही—
"पूरब में शैलेन्द्र शिखर है
घाटी वनमय एक वहीं।

बड़े-बड़े कच्छप औ' हाथी
उस घाटी में रहते हैं,
करते रहते शोर बहुत वे
आपस ही में लड़ते हैं।

जाओ, मार उन्हीं को तुम अब
अपनी भूख मिटाओ,
जीभर खाकर तन की मन की
अपनी शक्ति बढ़ाओ!"

गरुड़ उड़ा तत्क्षण यह सुनकर
उस घाटी की ओर,
देखा उसने वहाँ हाथियों
को करते अति शोर।

मारा उसने एक झपट्टा
दो-दो किये शिकार,
एक पैर में कच्छप दूजे
में हाथी लाचार।

लिये उन्हें चंगुल में अपने
चला वहाँ से शीघ्र,
खाना था अब कहीं बैठकर
लगी भूख थी तीव्र।

दिखा राह में बड़ा पेड़ इक
मीलों तक विस्तार,
बैठ गया वह उसी पेड़ पर
अपना लिये शिकार।

हाथी, कच्छप और गरुड़ का
था दुर्वह अति भार,
चरमर करके टूट पड़ी वह
सहसा मोटी डार;

किंतु गरुड़ भी थाम चोंच से
तत्क्षण गिरती डार,
उड़ा वहाँ से लिये-दिये सब
अपने पंख पसार।

हाथी, कच्छप थे चंगुल में
उधर चोंच में डार,
और डार में बालखिल्य मुनि
लटक रहे लाचार।

पास पिता गया गरुड़ जब
उड़ता मेघ समान,
बालखिल्य मुनियों की आयी
तभी जान में जान।

कश्यप जी मुनियों से बोले—
"बड़े कष्ट में पड़े आप सब,
किंतु गरुड़ को पता नहीं था
इसे न दे दें कहीं शाप अब।"

बालखिल्य मुनि यह सुनकर बोले—
"मुनिवर, सब है प्रभु की माया,
झूल रहे थे झूला हम सब
गरुड़ हमें था देख न पाया।"

मुनियों का आशीश प्राप्त कर
और पिता का पा आदेश
गया गरुड़ वह उसी भाँति फिर
हिमगिरि के तब दिव्य प्रदेश!

[२३]

[केशव और उसके साथी गुफ़ाओं में काफ़ी देर भटकने के बाद बाहर निकले। कुछ भेड़ियों ने, जो एक हरिण का पीछा कर रहे थे उन पर हमला किया। उनको मारकर तीनों जंगल में कुछ दूर बढ़े ही थे कि उन पर पत्थरों और कंड़ों की वर्षा होने लगी। इसके बाद—]

केशव जिस पत्थर के पीछे छुपा था, वहाँ से धीमे धीमे रेंगता, रेंगता जयमल्ल और जंगली गोमान्ना के पास गया। उसने पूछा—"जयमल्ल! कहीं हम फिर नरभक्षकों के हाथ तो नहीं आ गये हैं!"

जयमल्ल ने सिर हिलाते हुए कहा—"ये नरभक्षक नहीं मालूम होते। बिना किसी शोर शराबे के छुपे छुपे हम पर ये हमला कर रहे हैं। हो न हो, इसलिए ये किसी और जाति के मानव होंगे। नरभक्षक होते तो खूब शोर शराबा करते।"

केशव अभी कुछ कहने वाला था कि पत्थरों का गिरना रुक गया। दो तीन क्षण बाद जयमल्ल ने घुटनों के बल खड़े होकर देखा। जब उसके साथ केशव और जंगली गोमान्ना ने भी उठना चाहा, तो

पेड़ों के पीछे से ऊँची आवाज़ आई—"उन तीनों को जीता जी पकड़ लो। पंखवाले मनुष्यों को दे देंगे। हमारी जाति के अगर तीन आदमी भी बच गये, तो अच्छा ही है।"

"पंखवाले मनुष्य, हमारी जाति के लोग...." यह सुनते ही जयमल्ल झट से खड़ा हुआ। "आओ, अब जंगल में भाग निकलें।" यह कहकर वह पेड़ों के झुन्ड की ओर भागा। केशव और जंगली गोमान्ना भागने ही वाले थे कि एक मोटा ताज़ा जंगली लाठी लेकर जंगली गोमान्ना की ओर लपका। गोमान्ना उसी की लाठी से उसके गले पर चोट मारकर ज़ोर से भागा। केशव भी उसके पीछे पीछे भागा।

जंगल में बहुत दूर भागने के बाद, तीनों हाँफते हाँफते एक पेड़ के नीचे बैठ गये। उन्हें विश्वास हो गया कि शत्रु उनको खदेड़ते नहीं आ रहे थे। "पंखोंवाले मनुष्य" के बारे में सुनते ही जंगली गोमान्ना को डर लगने लगा। उसने केशव की ओर मुड़कर पूछा—"केशव, जंगली जातिवालों की बातें सुनी थीं न? क्या वे पंखोंवाले आदमियों को जानते हैं?"

"हाँ, पंखोंवाले आदमी कौन हैं? मुझे समझ में नहीं आ रहा है।" केशव ने कहा।

"क्या तुम दोनों ने कभी यह न सुना कि ऐसे लोग भी होते हैं?" जंगली गोमान्ना ने पूछा। केशव और जयमल्ल ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं तो।"

"पक्षियों की तरह उड़नेवाले, पंखोंवाले आदमी हैं, पर वे कहाँ रहते हैं, यह हम जंगली नहीं जानते, पर यह जानते हैं कि वे हैं और वे बड़े क्रूर हैं।" जंगली गोमान्ना ने कहा।

"पक्षियों की तरह उड़नेवाले मनुष्यों का होना असम्भव है।" जयमल ने कहा।

"नहीं तो उन जंगलियों के चिल्लाने का क्या मतलब है!" केशव ने पूछा।

"नहीं मालूम! मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" कहकर जयमल उठने ही वाला था कि उसे किसी का जोर का आर्तनाद सुनाई दिया—"बाप रे बाप, पंखोंवाला आदमी, मरे...."

यह सुनते ही तीनों उस ओर भागे। एक जंगली आदमी प्राणों के भय से काँपता काँपता चिल्ला रहा था। उसके आगे एक और आदमी चल रहा था। पेड़ पर से एक पक्षी-सी कोई चीज़ नीचे कूदी और उसे उठाकर दूर फेंक दिया।

"भयंकर पक्षी" जंगली गोमान्ना जोर से चिल्लाया। इतने में तीनों चिल्लाते चिल्लाते जंगली आदमी के पास पहुँचे। "तुम अपने दोस्त की फिक्र न करो, क्यों यों घबरा रहे हो!"

यह सुनते ही जंगली आदमी ने पीछे मुड़कर देखा। उसने इस तरह देखा, मानों जान में जान आ गई हो। "जो पंखोंवाले आदमी के हाथ फँस जाये उसको

पैर टूट सकते हैं, पर वह इतनी जल्दी मरेगा नहीं।" जयमल्ल ने कहा।

"फिर भी वह पंखोंवाला मनुष्य है कहाँ!" कहकर केशव ने पेड़ की ओर देखा।

"वह यहाँ कहाँ होगा! आकाश में उड़ गया होगा।" जंगली आदमी ने कहा।

जयमल्ल सोचने लगा। इसमें संदेह न था कि जंगली आदमी को मारनेवाला, पंखोंवाला आदमी ही था। उसके बड़े बड़े पंख थे और मामूली आदमियों की तरह उसके हाथ पैर थे। "क्या वह सचमुच आकाश में उड़ सकता है? नहीं तो क्या वह बड़ा मन्त्रवेत्ता है?"

"ये उड़नेवाले आदमी कितने होंगे? कहाँ होंगे?" जयमल्ल ने जंगली आदमी से पूछा। उसने कहा था कि वे बहुत सारे थे और वह उनकी संख्या नहीं जानता था। फिर उसने जयमल्ल को पश्चिम दिशा की ओर दिखाते हुए कहा—"उनकी जगह कहीं उन पहाड़ों के पीछे हैं। वहाँ जाकर कोई वापिस नहीं आया है।"

यह सुनते ही, जयमल्ल ने केशव की ओर मुड़कर कहा—"केशव, इसमें हो

कौन बचा सकता है! यही नहीं वे हम गुहावासियों से बदला ले रहे हैं। वे अपने देवता को बलि देने के लिए हममें से दो आदमी चाहते थे। हमने भेजे नहीं। इसलिए वे नाराज़ हैं।"

जयमल्ल सबसे पहिले भागकर उस आदमी के पास गया जिसको पंखोंवाले आदमी ने फेंक दिया था। उसने देखा कि वह मर चुका था।

"मेरा तो यह सन्देह है, कि इसका दिल डर के मारे रुक गया होगा। जो इतनी ऊँचाई से गिरता है, उसके हाथ

न हो कोई धोखा है। कोई उड़नेवाला आदमी मन्त्रशक्ति के कारण अथवा किसी और शक्ति के कारण कोई एक हो सकता है। उनका सैकड़ों की संख्या में होना सम्भव नहीं है। यह क्या रहस्य है मालूम करना होगा।"

"अच्छा तो ऐसा ही करेंगे। यदि हमें भी यह मालूम हो गया कि उड़ने की शक्ति कैसे आती है, तो हम भी बिना किसी आपत्ति का सामना किये सीधे भयंकर घाटी में पहुँच सकते हैं।" केशव ने कहा।

यकायक जहाँ ये खड़े थे, वहाँ चारों ओर से शोरशराबा होने लगा। पल भर में चालीस पचास जंगली आदमी बड़े बड़े भाले घुमाते उनको घेरते हुए आये "हार मान जाओ। भागने की कोशिश की, तो तुम्हें हम मार देंगे।" वे चिल्ला रहे थे।

केशव झट बगल में खड़े आदमी को सामने करके, धनुष पर बाण चढ़ाकर खड़ा हो गया। जयमल और जंगली गोमान्ना ने भी धनुषों पर बाण चढ़ाकर जंगलियों की ओर निशाना बनाया, जयमल ने जोर से कहा—"हम जीते जी, तुम्हारे हाथ नहीं आयेंगे। हम मरने से पहिले तुम में से आधों को मार देंगे। हमें तुम से दुश्मनी नहीं है। हमें जाने दो।"

केशव के सामने खड़े जंगली आदमी ने अपनी जातिवालों की ओर हाथ हिलाते हुए कहा—"इनका कोई नुकसान न हो। इन्होंने, मुझे पंखोंवाले आदमियों से बचाया है।"

"अगर चाहो, तो हम तुम सब गुहावासियों को पंखोंवाले आदमियों से बचा सकते हैं। हमारे बाणों का इस दुनियाँ में कोई जवाब नहीं है।" केशव

ने कहा। जंगली आदमियों ने एक दूसरे को देखकर भाले नीचे कर लिए। उनमें से वृद्ध नेता भाले की नोक नीचे किये सामने आया। उसने आकर कहा—"क्या सचमुच तुम हमें पंखोंवाले आदमियों से बचा सकते हो? वे हममें से दो आदमियों को, रोज देवता पर बलि चढ़ाने के लिए माँग रहे हैं।"

"हम तुम्हारी रक्षा ही केवल नहीं करेंगे, बल्कि इन पंखोंवाले मनुष्यों का ही सर्वनाश करदेंगे। हमारी बात पर विश्वास करो।" जयमल ने कहा।
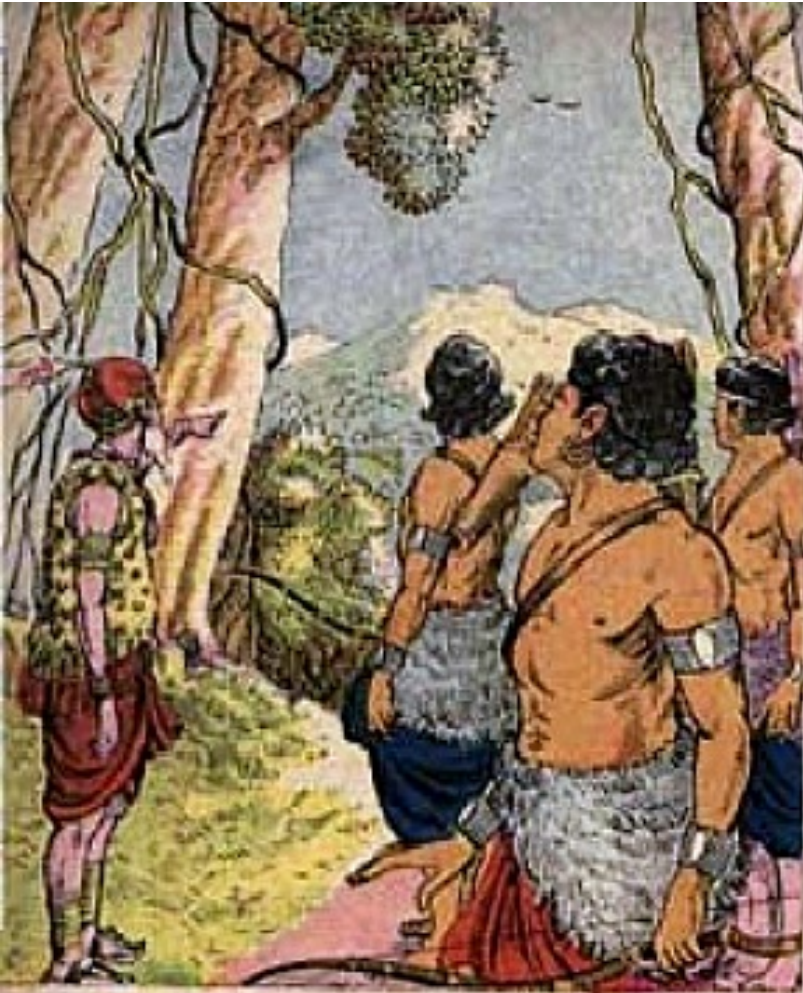
जंगली आदमियों के नेता ने अपना भाला दूर फेंक दिया। उसके अनुयायियों ने अपने अपने भाले भी एक जगह गाड़ दिये। केशव और उसके साथियों ने भी धनुष बाण रख दिये। जंगली आदमियों के नेता ने, केशव के पास आकर, उसके धनुष बाण को देखकर कहा—"हम इस प्रकार के हथियारों का उपयोग करना नहीं जानते। हम में से कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने पंखोंवाले आदमियों को इनका उपयोग करते देखा है। तुम सचमुच उनके बराबर के हो। तुम हमें उनसे बचाओ। रोज वे हमारी जाति के दो आदमियों को मार रहे हैं। हम से जो कुछ बन सकेगा, वह हम तुम्हारे लिए करेंगे।"

"तुम क्या भयंकर घाटी का रास्ता जानते हो?" जंगली गोमान्ना ने पूछा।

जयमल ने गुस्से से उसे रोकते हुए कहा—"अब इन बातों को पूछने का समय नहीं है। खैर, तुम किस जगह पर रोज बलि के लिए उन दुष्टों के हाथ दो आदमी छोड़ रहे हो?"

जंगली आदमियों के सरदार ने सिर उठाकर पेड़ों में से दिखाते हुए, एक पर्वत

शिखर की ओर इशारा करके कहा— "वह जगह यहाँ से कोई आधकोस दूर है। अन्धेरा होते ही हमारी जाति के दो लोग वहाँ चले जाते हैं। उनको ये पंखोंवाले आदमी उठा ले जाते हैं।"

"वहाँ कितने दुष्ट आते हैं। किस तरह तुम्हारे दो आदमियों को ये उठाकर ले जाते हैं?" जयमल ने पूछा।

"उनमें से कितने लोग आते हैं। किस तरह उठाकर ले जाते हैं, हम में से किसी ने नहीं देखा है। पर हम में ये अफवाह है कि वह हमारे लोगों के पैर पकड़कर आकाश में उड़ जाते हैं। पर इसमें कितनी सचाई है, हम नहीं जानते।" जंगली आदमियों के नेता ने कहा।

"तो, तुम अब जाकर बलि के लिए आदमियों को भेजो। हम भी जो कुछ करना होगा, करेंगे। हम कल सबेरे तक उन आदमियों को तो साथ लावेंगे ही, साथ ही यह भी मालूम कर आयेंगे कि उन दुष्टों का रहस्य क्या है? पर तुम्हारा गाँव है कहाँ यह बताओ?"

"हम पहाड़ी गुफाओं में रहते हैं। हम अनादिकाल से गुहावासी हैं। तुमसे मिलने के लिए हम कल सबेरे यहाँ आयेंगे।" गुहावासियों के नेता ने कहा। फिर वह अपने अनुयायियों के साथ चला गया। केशव आदि पहाड़ की चोटी की ओर चले। रास्ते में जंगली गोमान्ग ने एक खरगोश मारा और उसके भुने हुए माँस को अपने साथियों को दिया।
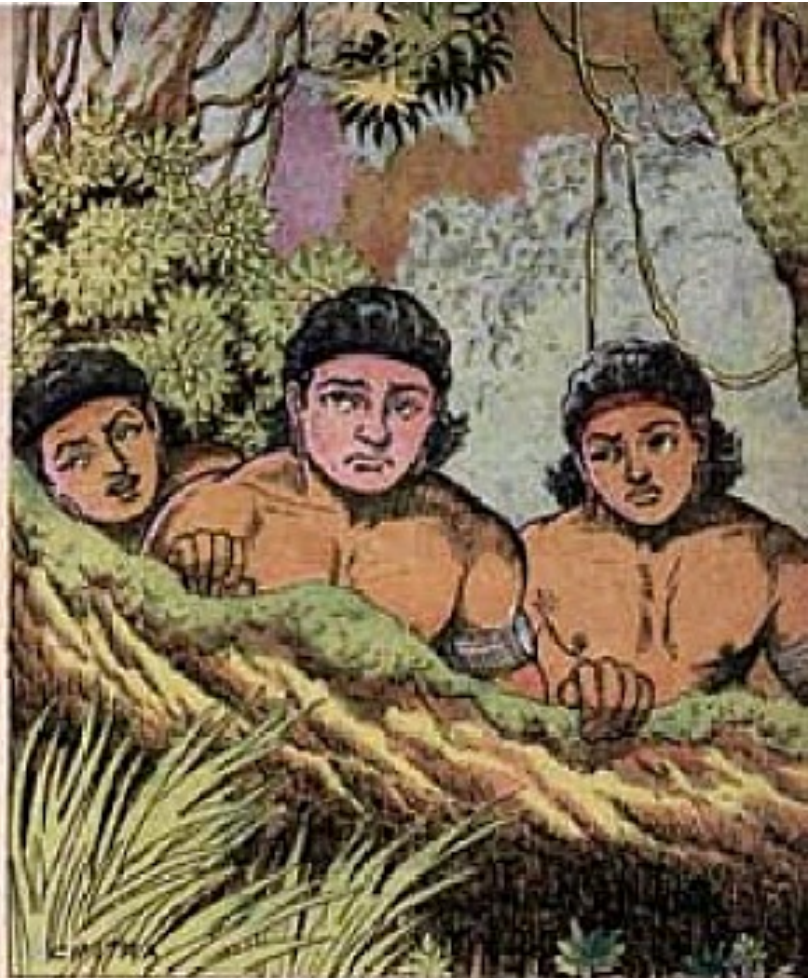
अब तीनों पर्वत के पास गये, तो अन्धेरा हो गया था। इतने में चन्द्रोदय भी होने लगा था। वे चान्दनी में पेड़ों के नीचे से जा रहे थे, कि उनको कोई आहट सुनाई दी। तीनों पेड़ों के पीछे

छुप गये। थोड़ी दूर पर एक बड़े वृक्ष के नीचे दो आदमी खड़े हुए थे। उनमें से एक ने दूसरे को सावधान किया। तुरत वे दोनों पेड़ के तने पर ऊपर चढ़ने लगे।

"देखे, उनके पंख।" केशव ने जयमल से धीमे से कहा। जयमल ने सिर हिलाया। इतने में उस पेड़ के पास दो और आये। जंगली गोमान्न ने उन दोनों की ओर ध्यान से देखते हुए कहा—"ये दोनों गुहावासी हैं। पंखोंवाले मनुष्यों के देवताओं के लिए बलि पशु-से हैं।"

हमने उनकी रक्षा करने का वचन दिया है। "केशव ने कहा। जयमल हाँ कहता धनुष पर बाण चढ़ाकर आगे बढ़ा। केशव और गोमान्न भी धनुष पर बाण चढ़ाकर, आगे आगे बढ़े।"

"ये दुष्ट क्या करते हैं, मुझे कुछ कुछ मालूम हो गया है। उन दोनों में से एक भी जीता जी न भाग जाये। समझे।" जयमल ने कहा।

"इससे पहिले कि वे गुहवासियों को आकाश में उड़ाकर ले जायें, हमें उन्हें मारना होगा। अगर यह नहीं हुआ तो हमारे बाण से—" जंगली गोमान्न कुछ कह रहा था कि इतने में "पक्षी माता की जय" की गूँज पेड़ों की झुरमुट में गूँजने लगी।

तुरत दो काली काली आकृतियाँ पंख फड़फड़ाती पेड़ों के नीचे खड़े गुफावासियों की ओर आने लगीं। जयमल केशव और जंगली गोमान्न ने जोर से तीनों ने उन पर बाण छोड़ा। [अभी है]

कृतघ्न

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा मैं तुम्हारी लगन का प्रशंसक हूँ। परन्तु मेरी सलाह है, इतनी मेहनत करके तुम किसी का उपकार न करो। चूंकि मनुष्य कृतज्ञता किसे कहते हैं, नहीं जानते। जो लोगों की मदद करने निकलता है, कभी कभी उसको ही नुकसान उठाना पड़ता है। इस बारे में प्रवाक नाम के कर्षक की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

पुष्करणी के तट पर एक कर्षकों का गांव था। उस गांव में सौ परिवार थे। सभी किसान थे। उनमें प्रवाक नाम का
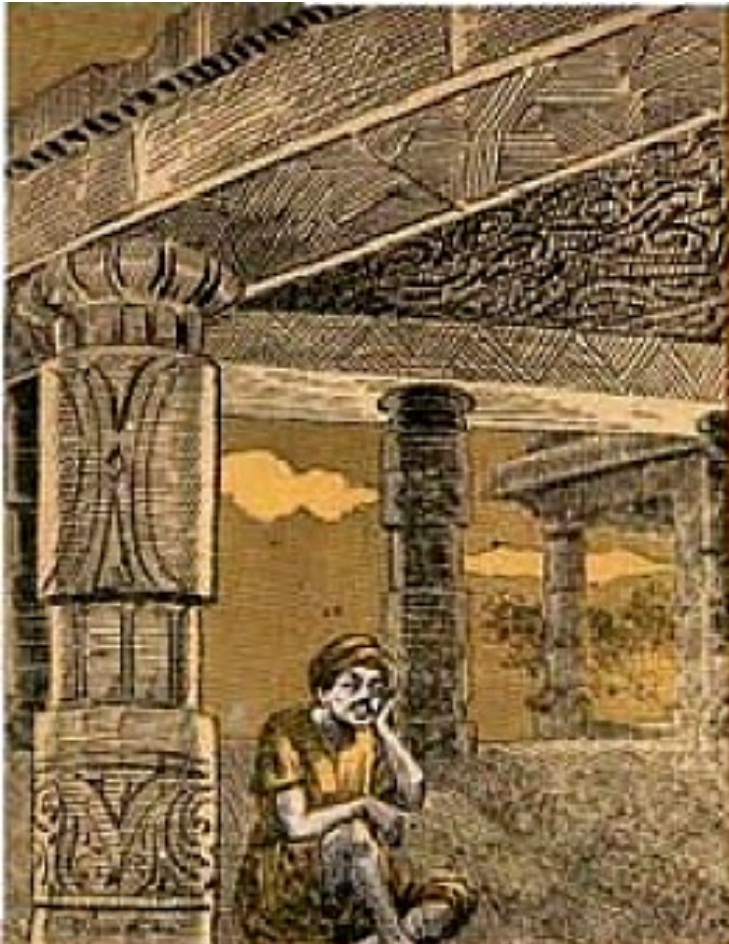
एक किसान था। उसके पास, होने को तो कम ही जमीन थी, पर इतनी मेहनत करता कि उसकी जमीन में, आस-पास के जमीन से अधिक उपज होती।

एक साल जब फसल करने का समय समीप आ रहा था, तो प्रवाक को किसी गाँव में दूर जाना पड़ा। उसका काम, जैसा कि उसने सोचा था, उतनी जल्दी नहीं हुआ। इसलिए जब वह घर वापिस आ रहा था तो अन्धेरा हो गया। ठँड भी बढ़ गई। वह जैसे तैसे कुछ दूर चला। उसे एक उजड़ा मन्दिर दिखाई दिया। उसने उसी में रात काटने की सोची। वह बाहर से यद्यपि मन्दिर-सा मालूम होता था, पर अन्दर कोई मूर्ति वगैरह न थी। उसे कब और किसने बनाया था, किसी को नहीं मालूम था। कई उसे वरुण का मन्दिर बताते थे।

क्योंकि मन्दिर के अन्दर उतनी ठंड न थी। इसलिए प्रवाक लेटते ही झट सो गया। थोड़ी देर बाद वह उठा। क्योंकि उसको बाहर से किसी का "ओहो ओहो" चिल्लाना सुनाई पड़ा।

तुरत मन्दिर में से किसी ने पुकारा "कौन है!"

"गर्जन का रथ चाहिये। तुरत तैयार करवाइये।" बाहर से आवाज आई।

"किसे चाहिए!" अन्दर के स्वर ने पूछा।

"हुजूर पुष्करणी के तट पर सवेरे ही जायेंगे।" बाहर से जवाब मिला।

"अच्छा, तो ठहरो—" अन्दर से आवाज़ आई।

यह सम्भाषण, पहिले तो प्रवाक समझ नहीं सका। जब उसने बाहर झाँक कर देखा, तो कोई नहीं दिखाई दिया।

परन्तु थोड़ी देर गर गर आहट हुई। हो सकता है कि वह रथ के चलने की आवाज हो। वह सुनने में मेघ गर्जन-सा लगता था। उसने जब उस तरफ़ देखा, तो बिजली भी थी।

इतने में उसे एक और बात भी याद आई। लोगों के मुँह सुना था कि यह वरुण का मन्दिर था। यदि यह सच है, तो सवेरे सवेरे हमारे गाँव में वर्षा आ सकती है। वर्षा आई, तो सारी फसल खराब हो सकती है। क्योंकि वह भला किसान था, इसलिए उसने भला ही सोचा। वह एक क्षण भी न रुका। वह उस रात में ही गाँव की ओर निकल पड़ा। सब को उठाकर उसने कहा—"सवेरे सवेरे वर्षा आयेगी। तुरत फसल काटकर घर ले आयें।"

उसकी बात पर किसी को विश्वास नहीं हुआ। सबने आकाश की ओर देखा। कहा "बारिश पारिश कुछ नहीं आयेगी।" कई ने यह भी कहा कि प्रवाक कोई चाल चल रहा था। वह गाड़ी लेकर गया, सवेरा होने से पहिले सारी फसल काटकर गाड़ी में डालकर घर ले आया।

उस दिन उन ग्रामवासियों ने सूर्य नहीं देखा। सूर्योदय के समय कहीं से काले काले बादल घिर घिर आये। और दिन भर मूसलाधार वर्षा हुई। गाँव वालों के खेत पानी में डूब गये। सारी फसल खराब हो गई। किसान बड़े झुँझलाये। प्रवाक की बात न सुनने पर उनको पश्चात्ताप नहीं हुआ बल्कि वे उसपर ही बिगड़ पड़े। उन्होंने तय किया कि उसके कारण ही उनकी फसल नष्ट हो गई थी। जब सारा गाँव ही उस पर बिगड़ा हुआ था तो वह अकेला क्या कर सकता था! वह गाँव ही छोड़कर चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मनुष्य क्यों इतने कृतघ्न हो जाते हैं? प्रवाक ने सब को सावधान किया था किसी की उसने हानि नहीं की थी। तब सारे गाँव ने उससे क्यों बदला लेना चाहा। इन प्रश्नों का तुमने जानबूझकर उत्तर न दिया तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"प्रायः मनुष्य उपकार के लिए कृतज्ञता दिखाते हैं। पर उपकार करने के प्रयत्न मात्र से कृतज्ञता नहीं दिखाते। प्रवाक ने गाँव का भला करने की कोशिश अवश्य की थी। पर कुछ कर नहीं पाया था। गाँववालों को वह आनेवाली आपत्ति के बारे में विश्वास न करा सका। खैर, जब वह जानता था कि सारे गाँव को नुकसान होगा, उसने केवल अपनी ही फसल बचाई। गाँव की नजर में यह स्वार्थ था। सुख या दुख जब हम पाँच दस के साथ बाँटकर अनुभव करते हैं तभी समाज हमारा आदर करता है। जो अपना कल्याण मात्र ही सोचते हैं उनके ऊपर लोग उँगुली उठाते हैं। इसीलिए वह गाँव द्वारा तिरस्कृत हुआ, गाँव को भयंकर क्षति सहनी पड़ी थी। इसके लिए वे किस पर क्रुद्ध होते! वे अपने पर स्वयं तो क्रुद्ध होते नहीं—ऐसा करना मनुष्य का स्वभाव नहीं है। वरुण पर क्रुद्ध होने से कोई लाभ न था। इसलिए उनके कोप का भाजन प्रवाक को ही बनना पड़ा।"

इस प्रकार राजा का मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया। और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

गन्धर्व सम्राट की लड़की

[४]

हुसन के जाने के बाद उसकी पत्नी दो दिन, अपने सास के साथ ही रही। तीसरे दिन, सूर्योदय के समय, उसने अपनी सास से कहा—"मैं स्नानशाला जाना चाहती हूँ। अच्छी तरह स्नान किये बहुत दिन हो गये हैं।"

"यह क्या कह रही हो बेटी! यह शहर हमारे लिए नया है। यह भी नहीं जानते कि स्नानशाला कहाँ है। पहिले ही जाकर इन्तज़ाम करने के लिए तुम्हारा पति भी नहीं है। मैं बूढ़ी हूँ। तुम्हारे साथ आ भी न सकूँगी। घर में ही नहा लो।" हसन की माँ ने कहा।

"स्नानशाला भी न जाने दिया जाय यह भी क्या बात है! दासियों पर भी इतनी पाबन्दी नहीं लगाई जाती है। इस तरह जीने से तो मरना ही अच्छा।" हसन की पत्नी ने कहा।

बहू का यह कहना बूढ़ी को भी बुरा लगा। उसने स्नान के बाद पहिनने के लिए कपड़े, इत्तर आदि लेकर उसने कहा—"चलो बेटी, तुम अपनी मरज़ी से ही करो। तुम्हारे पति को कहीं गुस्सा न आ जाये, इसकी जिम्मेवारी उस खुदा पर ही है।" यह बहू को साथ लेकर, बगदाद के सबसे मशहूर स्नानशाला में गई। हसन की पत्नी के स्नानशाला में पैर रखते ही, वहाँ की स्त्रियाँ आश्चर्य से, मुख खोलकर, उसकी ओर देखने लगीं।

उसी समय, रानी जुबेदा की दासी, तूफ़ाँ भी उसी स्नानशाला में थी। वह हसन की पत्नी को, जब तक वह नहाती रही, उसको ही देखती रही, यही नहीं, जब वह नहाकर अपनी सास के साथ घर गई, तो वह भी उनके पीछे पीछे गई। फिर उसने खलीफ़ा के महल में आकर जुबेदा रानी के सामने हसन की पत्नी का वर्णन भी किया।

जुबेदा, तूफ़ाँ को अच्छी तरह जानती थी। उसने कभी किसी के सौन्दर्य के बारे में इस तरह बात न की थी। इसलिए जुबेदा ने स्वयं उस अत्यन्त सुन्दर युवती को देखना चाहा। उस सुन्दरी का नाम तो तूफ़ाँ नहीं जानती थी, पर उसने बता दिया कि वह किस महल में रहती थी।

खलीफ़ा के अंगरक्षक मन्सूर को बुलाकर, जुबेदा ने कहा—"फ़लाँ महल में जाकर, वहाँ रहनेवाली स्त्री को साथ लाओ। यदि अकेले ही वापिस आये, तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।"

मन्सूर तुरत हसन के घर गया। किवाड़ खटखटाये। हसन की माँ ने किवाड़ खोलकर, मन्सूर को देखा। उससे पूछा कि उसे क्या चाहिये था।

"मेरा नाम मन्सूर है। मैं खलीफ़ा का अंगरक्षक हूँ। इस घर में रहनेवाली स्त्री को हमारी रानी ने साथ लाने के लिए कहा है।" हसन की माँ को डर लगा। उसने काँपते हुए कहा—"हम इस शहर में नये नये आये हैं। मेरा लड़का बाहर गया हुआ है। जाते जाते वह कह गया था कि उसकी पत्नी घर छोड़कर न जाये। यदि वह बाहर गई, तो जरूर कोई न कोई बुरा होगा। यदि

उसे कुछ हो गया; तो मेरा लड़का जिन्दा न रहेगा। क्या करूँ!"

"कोई भय नहीं है। हमारी रानी आपकी बहू के सौन्दर्य के बारे में सुन सुनाकर उनको देखना चाहती हैं। उस लड़की का कुछ नहीं होगा, मैं जो हूँ। जैसे उसको ले जाऊँगा वैसे ही उसको वापिस पहुँचा दूँगा।" मन्सूर ने कहा।

उस परिस्थिति में वह कुछ भी नहीं कर सकती थी, यह हसन की माँ ताड़ गई। वह अन्दर गई। अपनी बहू, और पोतों को अच्छे कपड़े पहिनवाये। फिर उनके साथ वह भी खलीफ़ा के महल गई।

जब वे पहुँचीं तो जुबेदा सिंहासन पर बैठी थी। उसके चारों ओर बहुत-सी दासियाँ थीं। उनमें तूफ़ाँ भी थी। जुबेदा ने हसन की पत्नी से कहा—"आओ! यहाँ कोई आदमी नहीं है। तुम अपना परदा हटा सकती हो।" उसने तूफ़ाँ की ओर देखा। तूफ़ाँ सामने आयी। हसन की पत्नी ने जो हल्का परदा कर रखा था, उसे अदब के साथ हटा दिया। गन्धर्व सम्राट की लड़की को देखकर जुबेदा

की दासियाँ आश्चर्य से, साँस लेना ही भूल गईं।

जुबेदा ने अपने को ही भूल बैठी। सिंहासन से उतरकर, हसन की पत्नी को गले लगा लिया। फिर उसने उसको अपने सिंहासन पर बिठाया और अपने गले का, मोती का हार उसके गले में डाल दिया। वह मोतियों का हार, जब से उसने खलीफ़ा से शादी की थी, उसी के गले में ही रहा था। अब उसने उसे हसन की पत्नी को भेंट दे दिया था।

पंख क्यों नहीं हैं? मेरे पास पक्षी का एक चोगा है। अगर आपने मेरी सास को भेजा, तो वे उसे ले आयेंगी।" हसन की पत्नी ने कहा।

जुबेदा ने बूढ़ी से कहा—"क्या आप उस चोगे को ला सकेंगी? वहू को उड़ता देख, हम प्रसन्न होंगी।"

हसन की माँ ने यह सोच कर कि अब खुदा ही उसकी रक्षा कर सकता था, जुबेदा से कहा—"क्या स्त्रियाँ, पक्षियों का चोगा पहिनती हैं? आपके सामने मेरी बहू पगला-सी गई है और कुछ नहीं है।"

परन्तु हसन की पत्नी ने उसे रोकते हुए कहा—"मैं जिस चोगे के बारे में कह रही हूँ वह हमारे घर में कहीं छुपाकर रखा गया है। यदि अच्छी तरह ढूँढ़ा गया, तो अवश्य मिलेगा। जुबेदा ने अपने हाथ के बहुमूल्य आभूषण को बूढ़ी को देते हुए कहा - "जाकर उस चोगे को तो ले आओ। कितनी देर की बात है? एक क्षण देखकर दिल बहलाऊँगी, फिर उसे आपको दे दूँगी।" परन्तु अब हसन की माँ ने कहा कि वह चोगे के बारे में

"क्या तुम गाना, नाचना, वगैरह जानती हो? तुम जैसी स्त्री, बिना उनके जाने नहीं रह सकती।" जुबेदा ने कहा।

"जो आम तौर पर स्त्रियाँ नाचना गाना सीखती हैं, वह मुझे नहीं आता। पर मैं एक ऐसी विद्या जानती हूँ, जिससे आपको आश्चर्य हो सकता है। मैं पक्षी की तरह उड़ सकती हूँ।" हसन की पत्नी ने कहा।

"आश्चर्य, आश्चर्य" दासियों ने कहा।

"बिना पंखों के कैसे उड़ोगी? मैं यह देखना चाहती हूँ। एक बार उड़कर दिखाओगी?" जुबेदा ने पूछा।

जानती ही न थी, उसकी जिद देख जुबेदा को उस पर गुस्सा आ गया। उसने मन्सूर को बुलाकर कहा कि जाकर हसन का घर छान डाले। अगर कहीं पक्षी का चोगा हो तो उसे खोजकर लाओ। घर की चाबियाँ, उसने बुढ़िया से उसको दिलवायीं।

मन्सूर ने सारे घर की तलाशी ली। आखिर उसने वह चोगा खोज निकाला। और उसे लेकर जुबेदा को दे दिया। जुबेदा ने उसे थोड़ी देर देखा। उसकी कारीगरी को देखकर चकित रह गई। फिर उसने उसे हसन की पत्नी को दे दिया। उसने उसे लेकर उसका पँख पँख देखा, वह बिल्कुल न बिगड़ा था। इसलिए वह बड़ी खुश हुई। उसे उसने पहिन लिया। फिर वह हॉल में ऊपर उठी और एक सिरे से, दूसरे सिरे तक उड़कर फर्श पर मँडराई। वह अपने दो लड़कों को लेकर, अपने कन्धों पर रख, रोशनदान में गई और वहाँ से उसने कहा—"मैं जा रही हूँ। मुझे विदा दीजिये।"

वृद्ध हसन की माँ कालीन पर गिर पड़ी और रोने लगी। उसकी बहू ने कहा—

"सास मैं तुम्हें और तुम्हारे लड़के को छोड़कर जा रही हूँ। मैं आपके बारे में दुखी हूँ। पर क्या कर सकती हूँ! उड़ने का लालच मैं संवरण न कर सकी। मुझे उड़ना ही होगा। यदि मुझे आपका लड़का ढूँढना चाहे, तो वाक वाक द्वीप में मुझे खोज सकते हैं। विदा।" यह कहकर वह रोशनदान में से अपने बच्चों के साथ आकाश में उड़ गई।

हसन की माँ मूर्छित हो गई थी। जुबेदा ने उसको उठाते हुए कहा—"यदि तुम यह न दिखाते कि तुम्हें कुछ नहीं मालूम है, तो यह सब होता ही न। पहिले ही जो कह देती, तो बात इतनी दूर न आती। अनजाने मैंने गल्ती की, मुझे माफ़ करना।"

"गल्ती मेरी है। मैं आपको क्या माफ़ करूँगी! शायद हमारी किस्मत में ही है कि हम यों रो रोकर मरें।" कहती हसन की माँ पैर घसीटती घसीटती घर गई। इस भ्रम में कि कहीं उसको उसके पोते दिखाई देंगे, उसने सारा घर छान डाला। पर क्यों कोई दिखाई देता! उसने एक बड़ी समाधि और दो समाधियाँ घर में बनाकर, उनके पास पड़ी पड़ी दिन रात रोया करती।

हसन ने सात राजकुमारियों के साथ तीन महीने बिताकर, यह सोच कि उसके लिए उसकी माँ, पत्नी और बच्चे प्रतीक्षा कर रहे होंगे, बहिनों से विदा ली। ढपली बजाकर, ऊँटों को बुलाकर, राजकुमारियों का दिया हुआ सोना चान्दी उन पर लदवाकर बगदाद नगर वापिस आ गया।

जब वह अपने घर में घुसा, तो अपनी माँ को पहिचान न पाया।

"मेरी पत्नी कहाँ है? बच्चे कहाँ हैं!" उसने पूछा। इन प्रश्नों के उत्तर में माँ जोर से रोने लगी। हसन की अक्ल जाती रही। जब उसने सारा घर खोजा। तो जिस जगह वह चोगा था, वह वहाँ न था। समाधियाँ दिखाई दीं। उनको देखते ही वह ढह-सा गया। मूर्छित हो गया।

माँ ने बहुत सेवा शुश्रुषा की पर रात होने की बाद भी उसे होश न आया। होश आने पर उसने अपने कपड़े फाड़ने शुरु किये। सिर पर उसने धूल फेंका। चाकू भोंककर मरने की कोशिश की। पर उसकी माँ ने उसे रोका। उसने उसे समझाकर कहा—"बेटा, तुम्हारे निराश होने की कोई ज़रूरत नहीं है यदि तुम बाक बाक द्वीप गये तो वहाँ तुम अपनी पत्नी को देख सकते हो।"

यह सुनते ही हसन की जान में जान आयी। उसने झट उठकर कहा—"अभी बाक बाक द्वीप जा रहा हूँ। पर इस तरह के नाम का द्वीप कहाँ होगा! क्या इसके लिए इण्डिया जाना होगा! फारस जाना होगा! या चीन!" उसे कुछ न सूझा।

वह सीधे खलीफ़ा के दरबार में गया। वहाँ के सब पंडितों से पूछा कि बाक बाक किस समुद्र में है। पर किसी को नहीं मालूम था। किसी ने उस द्वीप के बारे में नहीं सुना था। उसमें उससे पूर्व जो आशा जगी थी वह तुरन्त शान्त हो गई। अब मैं सीधे मृतलोक ही जाऊँगा। यह सोचकर वह जाकर लेट गया।

परन्तु इतने में उसके मन में एक और आशा उपजी। उसे राजकुमारियों की याद आयी। उसने फिर माँ से विदा ली। ऊँट

उन्होंने कहा—"हसन, हाथ उठाकर, शायद तुम स्वर्ग छू सकते हो। पर वाक वाक द्वीप में जाना असम्भव है।" हसन की आशाओं पर पानी फिर गया। वह अत्यन्त दुःखी हो उठा।

उस राजकुमारीने, जिसने उसको पहिले पहल अपनाया था कहा—"हसन, यदि तुम्हें, तुम्हारी पत्नी और बच्चे मिलने होंगे, तो, कोई न कोई उपाय भी मिलेगा। हमसे जो कुछ बन सकेगा, वह अवश्य करेंगी। हम हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठेंगी। दुःख न करो।"

उस राजकुमारी का एक मामा था, जिसका नाम अब्दुल कद्दूस था। वह साल में एक बार अपनी भान्जियों को देखने आता था। यदि उसको ज़रूरत पड़ने पर बुलाना होता था, तो वे आग में एक प्रकार का चूरा डालती थीं। वह चूरा बड़ी राजकुमारी के पास था। उसको लेकर, जब आग में डाला गया, तो बवंडर-सा उठा। उसके जाते ही सफ़ेद हाथी पर अब्दुल कद्दूस आया।

"मुझे आये एक साल हो गया है। मैं आने की सोच रहा था, कि इतने में

को बुलाकर उस पर सवार हो, अपनी बहिनों के पास गया। उसे इतनी जल्दी वापिस आया देख वे सब बड़ी खुश हुई। उसने जो कुछ गुज़रा था, वह बताया। वह शोक विह्वल हो उठा। उन्होंने उसको आश्वासन दिया।

"वाक वाक द्वीप का मार्ग मुझे बताओ। वहाँ खोजने पर, उसका पता लग सकेगा। वह जाते जाते मेरी पत्नी कह गई थी।" हसन ने कहा।

सात बहिनों ने एक दूसरे का मुँह देखकर, सिर नीचे कर लिए। आखिर
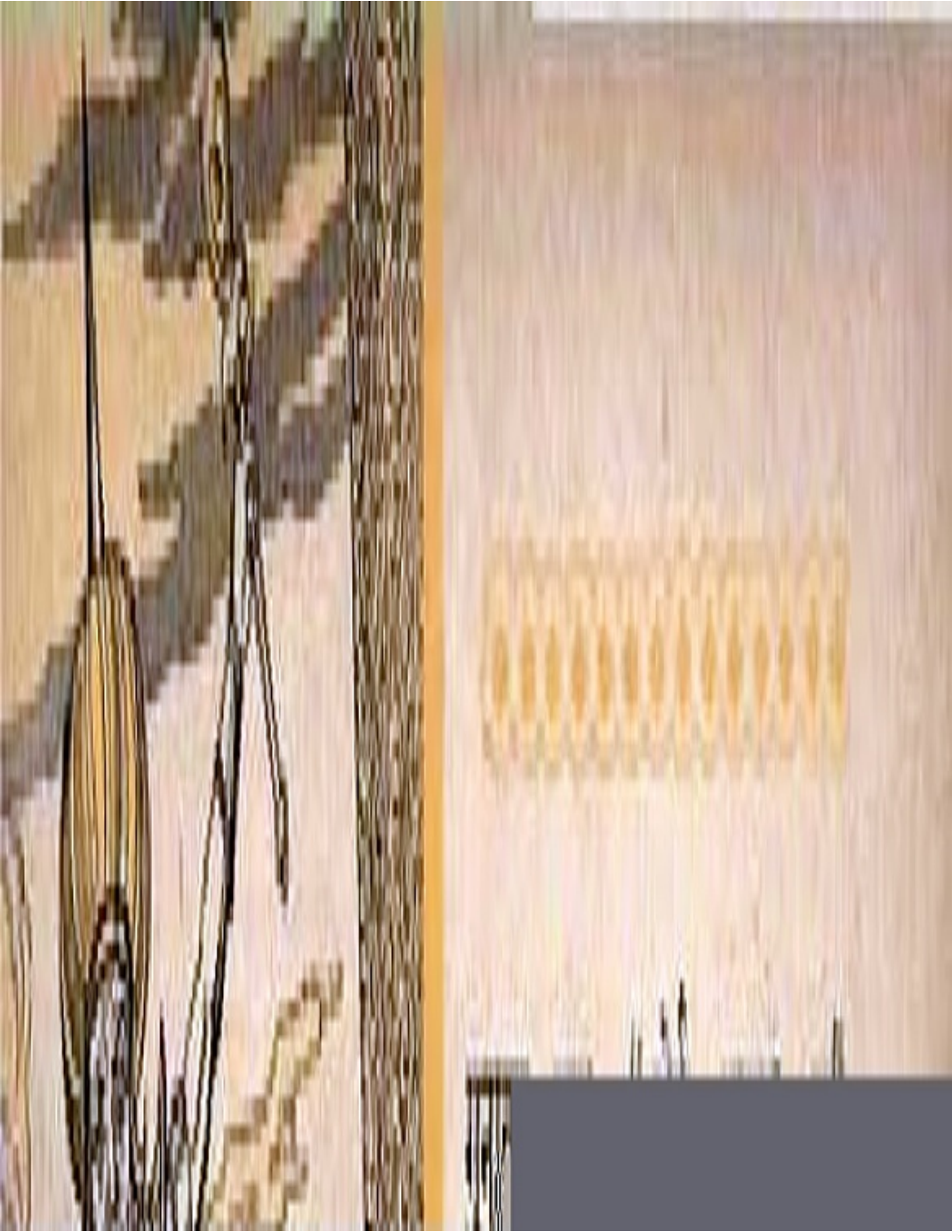
कोई रास्ता मिल जाये। मेरे साथ आओगे!"

हसन की फिर जान में जान आई। वह उठा और बूढ़े के साथ चल पड़ा। दोनों सफ़ेद हाथी पर सवार हो गये। कद्दूस ने उसके कान में कुछ कहा। तुरत हाथी हवा में उठा। तेजी से उड़ता, नील पर्वत पर पहुँचा। नील पर्वत में एक गुफ़ा थी। उस पर नीले रंग के लोहे के किवाड़ थे। वृद्ध के किवाड़ खटखटाते ही नीले रंग का एक नीग्रो नीली तलवार, नीली ढाल पकड़े आया। वृद्ध ने देखते देखते, उसकी तलवार और ढाल लेकर दूर फेंक दी। तुरत नीग्रो ने उसको रास्ता दिया। दोनों के गुफ़ा में घुसने के बाद उसने किवाड़ बन्द कर दिये।

गुफ़ा में, एक मील चलने के बाद उनको दो दरवाजे दिखाई दिये। दोनों पर सोने के किवाड़ थे। अब्दुल कद्दूस एक के किवाड़ खोलकर अन्दर चला गया। उसके आदेश के अनुसार हसन बाहर ही खड़ा रहा।

एक घंटा बाद वह एक घोड़े को लेकर बाहर आया। घोड़ा नीला था,

उसकी जीन भी नीली थी। उसने हसन को उस घोड़े पर सवार होने के लिए कहा, दूसरा दरवाजा खोला। उस द्वार के बाद सिवाय नीले आकाश के कुछ न था।

"बेटा, सोच सोचकर आखिरी बार निर्णय कर लो। तुम्हें बहुत-सी आपत्तियों का सामना करना होगा। क्या तुम उनका सामना करोगे? या अपनी बहिनों के पास वापिस जाओगे?" उसने हसन से पूछा।

"हज़ार मौतों का सामना करूँगा।" हसन ने कहा।

"क्या अपनी माँ के लिए भी वापिस नहीं जाओगे?" बूढ़े ने पूछा।

"मैं, अपनी पत्नी और बच्चों को बिना साथ लिये माँ के पास भी नहीं जाऊँगा।" हसन ने कहा।

"अच्छा, तो ऐसा ही हो। यह पत्र ले लो। घोड़े को तुम्हें चलाने की ज़रूरत नहीं है। वह रास्ता जानता है। वह तुम्हें काले पर्वत के पास छोड़ देगा। काली गुफ़ा के पास उतरकर, घोड़े को गुफ़ा में जाने दो। एक बूढ़ा बाहर आयेगा। वह काला होगा। पर घुटनों तक उसकी सफ़ेद दाढ़ी होगी। उसको नमस्कार करके यह पत्र देना। वह पक्षियों का राजा है। और मुझ से बड़ा है। और ऊपर है। बिना उसकी सहायता से तुम्हारा काम होना असम्भव है। इसलिए तुम उनका विश्वास पाओ।" कहकर अब्दुल कद्दूस नीली गुफ़ा में चला गया। नीला घोड़ा ज़ोर से हिन हिनाकर आकाश में उड़ा।

[अभी है]

भूतों को पकड़ने वाले मनुष्य

बच्चे भूतों के बारे में बात कर रहे थे।

"यह कहानी बिल्कुल झूठी है। वाकई, भूत नहीं होते।" एक ने कहा। "टीले पर, द्रौपदी को अगर भूत ने नहीं पकड़ा है, तो किसने पकड़ा है? भूत हों या न हों, पर मैं उनसे डरती हूँ।" छोटी ने कहा। "भूत होने को हों, तो हों पर मैं उनसे नहीं डरता।" छोटे ने कहा।

वे यों बातें कर रहे थे कि बाबा ने आकर उनकी बातें सुनीं। उसने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—"अगर भूत हैं तो उन्हें रहने दो, न उनसे हमको मतलब, न हमें उनसे मतलब है।" "अगर हमें भूत ने पकड़ लिया, तो? वे हमें देख सकते हैं, पर हम उनको नहीं देख सकते।" बड़े लड़के ने कहा।

"किसने कहा है यह?" हम उनको नहीं देख सकते। यदि उन्होंने कभी भूल कर हमें पकड़ा भी तो, हम भी उन्हें पकड़ सकते हैं।" बाबा ने कहा।

"मनुष्य क्या भूत पकड़ सकते हैं?" बड़ी लड़की ने पूछा।

"बाबा, क्या वे भी हमें देखकर डरते हैं?" छोटे ने पूछा।

"क्यों नहीं डरते....पर कभी....।" बाबा ने सुंघनी निकाली।

"कहानी....कहानी" बच्चे, बाबा को घेर कर बैठ गये।

बाबा ने सुँघनी लेकर आराम से कहानी सुनानी शुरु की—

पाँच छः सौ वर्ष पहिले, रब सेठ नाम का व्यापारी हुआ करता था। वह जहाज़ में

स्वर्ण द्वीप, रत्न द्वीप, पन्ना द्वीप, आदि द्वीप गया। उसने वहाँ जाकर लाखों, करोड़ों रुपया कमाया। पर लालच का अन्त कहाँ है! रत्नसेठ ने अपनी साठवीं वर्ष गाँठ पर कहा "एक बार और समुद्र की यात्रा करके आऊँगा, फिर उसके बाद घर आराम से बैठूँगा।"

"तब क्या है! जहाज तैयार किया गया। माल चढ़ाया गया। जहाज, मोतियों के द्वीप की ओर चल पड़ा। दो सप्ताह की यात्रा के बाद समुद्र में तूफ़ान आया। आकाश में काले बादल घिर आये। जहाज मथनी की तरह फिरने लगा। जहाज़वाले यह भी न जान सके कि पूर्व किस तरफ था और पश्चिम किस ओर, तूफ़ान बढ़ता जाता था। जहाज़ न मालूम किस तरफ बहने लगा। कितनी ही बार जहाज़ डूबते डूबते बचा।

कुछ दिनों बाद, तूफ़ान जाकर कम हुआ। आकाश साफ हुआ। सूर्य भी दिखाई देने लगा। सूर्य की दिशा में, नाविकों को ऊबड़ खाबड़ ज़मीन भी दिखाई दी।

"वह देश क्या है!" जहाज़ के कप्तान आदि, ने रत्नसेठ से पूछा।

"वह कोई ऐसा देश नहीं है, जिसे मैंने पहिले देखा हो, कोई भूतों का द्वीप होगा।" रत्नसेठ ने कहा।

किसी को विश्वास नहीं हुआ। धीमे धीमे जहाज़ किनारे के पास आया, अब उनको एक तरफ़ पहाड़ उसके ऊपर, नीचे पेड़। पेड़ों के बीच में भगती भेड़े। दूसरी तरफ खेत। दूरी पर एक नगर और उसका प्राकार स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

"वह भूतों का देश भला क्यों होगा! नहीं क्या ये पेड़ भूत हैं! उन खेतों

में क्या भूतों का धान खड़ा है? नहीं तो....." नाविकों ने कहा।

रत्नसेठ ने कोई सीधा जवाब न दिया। फिर उसने कहा—"भूतों का देश हो या न हो, हमें वहाँ जाना ही होगा। वहाँ के लोगों की सहायता के बगैर हम घर कैसे पहुँच सकेंगे।"

"यह सच भी था न? इसलिए रत्नसेठ के साथ कप्तान और कुछ लोग निकले। नाविकों में से कुछ पीने का पानी ढूँढने निकले। बाकी जहाज़ की रक्षा के लिए जहाज़ पर ही रहे।

रत्नसेठ आदि एक पगडंडी पर चलने लगे। वह पेड़ों के बीच में से नगर की ओर जा रही थी। एक एक के पीछे, जब उस रास्ते पर कुछ दूर गये तो उनको सब्जियों की क्यारी में एक बूढ़ा काम करता दिखाई दिया। रत्नसेठ ने रुककर पूछा—"क्यों भाई, अगर हम इस रास्ते पर गये, तो किस नगर में पहुँचेंगे?"

बूढ़े ने सिर उठाकर उनकी ओर देखा तक नहीं! यह सोच कि वह बहरा होगा, वे कुछ दूर आगे बढ़े। एक युवक फावड़ा कन्धे पर डाल सामने आया। रत्नसेठ के आदमियों ने असे रास्ता दिया।

यह सोच कि जब कुछ अजनबी मिलेंगे, तो वह पूछेगा तुम कौन हो? कौन देश है? तुम्हारा देश क्या है? वह पूछ सकता था। उसने कुछ न पूछा और तो और उसने उनकी ओर आँख उठाकर देखा तक न! वह अपने रास्ते चला गया। उसे अन्धा भी नहीं कह सकते थे क्योंकि रास्ते पर वह आराम से चल रहा था।

ये उनकी ओर खड़े खड़े देख ही रहे थे कि पीछे से किसी के आने की आहट

"डरते काहे को हो! हमें ये भूत देख नहीं सकते। यह चूँकि उनका देश है, इसलिए हम उनको देख पा रहे हैं। हम यहाँ जान बूझकर तो नहीं आये हैं। यहाँ की पूरी चीज़ें देखकर ही जायेंगे। अपने देश जाकर हम औरों से कह सकेंगे कि और देशों के साथ हम भूतों का देश भी देख आये हैं। जब वे यहाँ की बात पूछेंगे तो क्या हम यह कहेंगे कि हम कुछ नहीं जानते हैं! तब क्या हमारी तौहीन न होगी!" रत्नसेठ ने कहा।

बूढ़ा सेठ करोड़पति था, अब उसको ही डर नहीं है, तो हमें क्या डर है, यह सोचकर, उसके पीछे पीछे चल पड़े। जाते जाते, नगर का द्वार आया।

द्वार के पास खुली तल्वार लिये पहरेदार खड़े थे।

"हम उनको दिखाई नहीं देंगे। हमारी बातें उनको सुनाई नहीं पड़ेंगी। डरो मत। चलो।" रत्नसेठ ने रास्ता दिखाया। पहरेदारों ने उनको देखा ही नहीं। रोका भी नहीं।

चलते चलते राजमहल आया। सेठ निर्दय हो अन्दर गया। वे पहरेदारों के

सुनाई दी। चार पाँच बच्चे उनके बीच में से भाग गये। उन बच्चों का शरीर न इन लोगों को छुआ, न इनका शरीर उन लोगों ने छुआ।

अब क्या था! रत्नसेठ ने जो कहा था, वह बिल्कुल ठीक था। वह भूतों का देश था। जो उनको दिखाई दिये थे वे भूत थे।

"मैंने कहा था न यह कोई भूतों का द्वीप है।" रत्नसेठ ने कहा।

"हमें एक क्षण नहीं रहना चाहिए। लँगर उठाकर अभी चले जायेंगे।" बाकी सब ने कहा।

शरीर के बीच में से ही चले गये। बाहर और अन्दर वह महल बड़ा सुन्दर था। बाहर सुन्दर फूलों वाले पेड़ थे। अन्दर से संगीत सुनाई पड़ रहा था।

सेठ जहाँ से संगीत सुनाई पड़ रहा था वहाँ अपने आदमियों को लेकर गया। वह बड़ा हाल-सा था, बहुत से लोग बैठे थे। एक तरफ राजा, रानी, राजबन्धु और ऊँचे कर्मचारी बैठकर सहभोज कर रहे थे। एक ओर गानेवाले गा रहे थे। नाचने वाले नाच रहे थे। बड़ा ऐश्वर्य था।

"तमाशा करूँगा, देखते रहो।" अपने साथियों से कहकर, रत्नसेठ सीधा जाकर राजा के सामने खड़ा हो गया। सेठ ने झुककर राजा के मुँह में मुँह रखकर देखा। तब भी राजा ने सेठ को नहीं देखा, परन्तु वह यकायक मूर्छित होकर गिर गया। सेठ को यह देख आश्चर्य हुआ।

सहभोज करनेवालों में हाहाकार शुरु हुआ। नृत्य, गान, हास-परिहास सब रुक गया। "क्या हुआ! क्या हुआ!" सब राजा के पास आये।

मन्त्री ने आकर राजा को देखकर कहा—"शायद भोजन में विष मिला दिया गया है।" उसने राज वैद्य को बुलवाया।

राज वैद्य ने आकर पहिले राजा के सामने रखी खाने की चीज़ों को सूँघा, फिर उनको चखकर देखा। "इसमें विष तो नहीं है। भूत वैद्य को बुलाओ।" उसने कहा।

भूत वैद्य आया। राजा की ओर एक बार देखा। "कुछ नहीं, हवा है," उसने कहा।

"हवा का क्या मतलब है!" मन्त्री ने पूछा।

"और कुछ नहीं, महाराजा को मनुष्यों की हवा लगी है। इसलिए मूर्छित होकर गिर गये हैं। न मालूम हम लोगों के बीच मनुष्य आ पड़े हैं। जब तक उनको भेजा नहीं जाता, तब तक महाराजा को होश नहीं आयेगा।" भूत वैद्य ने कहा।

तुरत मन्त्री ने हाथ जोड़कर, सिर ऊँचा करके, आँखें मूँद कर प्रार्थना की। "हम लोगों के बीच में आये हुए मनुष्य! हमारा अपकार न करो। तुम अपने रास्ते चले जाओ। जो तुम चाहोगे वे देंगे, बहुत कुछ खाने को है। जितना खाना चाहो, उतना खाओ, जितना चाहो, ले जाओ!"

भूत वैद्य, राजा को एक तरफ़ लिटा कर कोई मन्त्र पढ़ रहा था और सेठ आदि ने पेट-भर कर वह स्वादिष्ट भोजन खाया। फिर वे अपने साथियों के लिए, जितनी खाने की चीज़ें ढो सकते थे उतने गट्ठरों में ढोकर अपने जहाज़ के पास गये।

पर जब जहाज़ में आकर उन्होंने गट्ठर खोले तो उनमें "पिंड" ही पिंड थे। अब सिद्ध हो गया था कि उन्होंने भूतों का द्वीप ही देखा था। उन्होंने लंगर उठाया, पाल उठाये। समुद्र में निकल गये। थोड़े दिनों में वे अपने देश पहुँचे। उसके बाद फिर किसी ने भूतों का द्वीप नहीं देखा।

बाबा ने यह कहानी सुनाकर कहा— "इसलिए जहाँ मनुष्यों को रहना चाहिए वहाँ उनको रहना चाहिए। भूतों को अपनी जगह रहना चाहिए। एक दूसरे को आपस में नहीं दखल देना चाहिए। जब हमारे बीच भूत आ जाये तो उसे अच्छी तरह भेज देना चाहिए, न कि उससे डरना चाहिए।

चान्द की बुढ़िया

एक गाँव में एक गरीब रहा करता था। उसका दुनियाँ में कोई न था, वह धान कूटने की मजदूरी किया करता। जब वह धान कूटा करता, तो एक खरगोश आकर भूसा खाया करता, वे दोनों हिल गये।

गरीब चान्दनी रात में भी धान कूटा करता। उसके मन में एक इच्छा थी, धान साफ़ करने के लिए यदि एक स्त्री हो, तो क्या अच्छा हो।

एक दिन रात को जब वह धान कूट रहा था, तो एक बुढ़िया आकर धान साफ़ करने लगी। इस तरह उसका काम जल्दी जल्दी होने लगा। जब चान्दनी न होती तो गरीब धान भी न कूटता। न बुढ़िया ही आया करती।

एक दिन उसने बुढ़िया से पूछा—"तुम कौन हो?"

"बेटा, मैं चान्द में रहती हूँ। यह देख कि तुम अकेले मेहनत कर रहे हो, मैं तुम्हारी मदद करने आयी हूँ। चाहो, तो तुम भी वहाँ चले आओ।" बुढ़िया ने कहा। वह इसके लिए मान गया और अपने खरगोश के साथ चान्द में चला गया।

आज भी हम ध्यान से देखेंगे, तो चान्द में धान कूटनेवाला, धान साफ़ करनेवाली बुढ़िया और भूसा खानेवाले खरगोश को देखेंगे।

शिशु रोदन

शादी होते ही, अड़ोस पड़ोस की स्त्रियाँ, यही सोचती रहती हैं कि उनके सन्तान कब होती है। महालक्ष्मी का विवाह हुए दो साल होने को थे। परन्तु अभी तक उसके सन्तान न हुई थी। स्त्रियों ने यह बात जमीन्दारनी से भी छेड़ी।

एक स्त्री ने कहा—"क्यों नहीं लड़की से कोई व्रत करवाती? सन्तान के होने पर ही गृहस्थी में चार चाँद लगते हैं। बड़े कहते हैं कि बच्चे हँसते हैं तो देवता दौड़े दौड़े आते हैं और जब वे रोते हैं तो भूत भी भाग जाते हैं।

भीम के कान में यह बात पड़ी कि बच्चों के रोने से भूत भाग जाते हैं। वह न जान सका कि स्त्रियाँ वाक़ई किस बात के बारे में कह रही थीं। जब उसे मालूम हुआ कि भूत इतने आसानी से भाग जाते हैं, तो उसे आश्चर्य हुआ। क्योंकि सुना जाता था कि जमीन्दार के बागवाले मकान में भूत थे। उनको कोई भगाने की तो कोशिश नहीं करता और तो और वहाँ हर साल मेले लगते और भूतों को बलियाँ दी जातीं, भीम को यह सब पसन्द नहीं था।

उसने दो तीन बार उन मेलों के बारे में कहा—"भूतों को क्यों जिन्दे प्राणियों की बलि दी जाती है? उनको भगाने का कोई और मार्ग नहीं है?"

"भूतों के बारे में इस तरह बात न कीजिये। उनकी बात ही नहीं करनी चाहिए।" महालक्ष्मी ने उसको परामर्श दिया। इसके बाद उसने अपनी पत्नी से

तो भूतों के बारे में नहीं कहा, पर मन ही मन उनके बारे में सोचता ही रहा।

इतने दिनों बाद वह इसका इलाज जान सका था। क्यों कि बड़ों ने यह कहा है कि बच्चों के रोने पर भूत भाग जाते हैं, इसमें निस्सन्देह कोई झूठ नहीं है।

भूतों को भगाने के साधन भी भीम के पास थे। जमीन्दारों के नौकरों में से एक की पत्नी के कुछ ही दिन पहिले बच्चा हुआ था। उस बच्चे को बीच में सुलाकर, वे और उसकी पत्नी बराण्डे में सोते थे। उस बच्चे की मदद से भीम ने बाग के मकान के भूतों को भगाने की सोची।

आधी रात के समय, जब वे गाढ़ी निद्रा में थे, तो भीम उठा, चुपचाप, पीछे के बराण्डे में गया, नौकर के लड़के को उठाकर बागवाले मकान में गया। लड़के को उसने मकान के बीच में लिटाया और प्रतीक्षा करने लगा कि वह कब रोता है। पर बच्चा सोता ही रहा, रोया नहीं।

आखिर भीम ने ऊबकर, उस बच्चे को चूँटी काटी। उसके रोने पर जब भूत भागने लगेंगे, उन्हें देखने के लिए, जल्दी जल्दी बाहर गया और पेड़ों के पीछे छुप गया।

भले ही कितनी गाढ़ी निद्रा हो, माँ को अपने लड़के का रोना पता लग जाता है। यद्यपि बच्चा दूर रो रहा था, तो भी उसकी रोने की ध्वनि सुनकर, नौकर की पत्नी सहसा उठ बैठी। जब उसने बच्चे को बगल में नहीं देखा तो उसने पति को उठाया। देखते देखते घर में सब जाग गये। दीये लेकर सब बाग के घर की ओर जाने लगे।

उसी समय, भीम जहाँ छुपा हुआ था, वहाँ से एक चूहा भागा। "भूत, भूत मारो मारो" चिल्लाता, भीम उसके पीछे

भागा। परन्तु चूहा उससे बचकर, किसी पेड़ की जड़ में घुस गया।

बच्चे को सकुशल पाकर नौकर और उसकी पत्नी बड़े खुश हुए। फिर सब घर चले आये। और सो गये।

महालक्ष्मी ने आखिर जान लिया कि क्या हुआ था।

"क्या इस तरह करने से भूत भागते हैं? कम से कम मुझसे कहा तो होता कि यह काम करने जा रहे थे।"

"तुमने तो कहा था कि भूतों की बात ही न छेड़ना। इसलिए मैंने तुमसे नहीं कहा था। पर क्या बूढ़ों का कहना झूट है कि बच्चों के रोने से भूत भाग जाते हैं?" भीम ने अपनी पत्नी से पूछा।

महालक्ष्मी न सोच सकी कि क्या जवाब दिया जाये। थोड़ी देर बाद उसने कहा—"यह सच तो है। भूत तभी भागते हैं जब बच्चे अपने आप रोते हैं न कि जब हम उन्हें चूँटी काटकर रुलाते हैं।

भीम ने कुछ सोचकर कहा—"पर मैंने भूत को अन्धेरे में भागते देखा है। उस बारे में क्या कहती हो?"

"वह कोई चूहा वूहा होगा।" महालक्ष्मी ने कहा। भीम ने सोचा कि शायद कोई ऐसी ही बात होगी।

पर अगले दिन सब कहने लगे कि जब नौकर के लड़के को भूत बागवाले मकान में उठा ले गये, तो जमीन्दार का जमाई उनसे खूब लड़ा और उसकी रक्षा करके ले आया। (अगले मास एक और घटना)

बिजली के साथ वर्षा ★

[रामतीर्थ कथा]

ग्रीक दार्शनिक सुकरात की पत्नी बड़ी चुड़ैल थी, एक दिन जब सुकरात किसी चिन्तन में व्यस्त था कि पत्नी ने आकर कोई कड़वी बात कही, कुछ काम बताया।

जब सुकरात किसी समस्या पर सोच रहा होता, तो उसका मन उसी पर रहता। इसलिए उसने अपनी पत्नी को जवाब न दिया। उसकी पत्नी और झुंझलायी, ज़ोर से चिल्लाने लगी। तब भी सुकरात अपने विचारों में से न उठा। उसकी पत्नी और क्रुद्ध हुई। उसने एक बर्तन में पानी लाकर, अपने पति के सिर पर उंडेल दिया।

सुकरात ने सिर उठाकर, पत्नी की ओर देखा। "जब बिजली गरजती है, तो कहते हैं, वर्षा भी होती है। यह बात सच है, यह आज ही मुझे मालूम हुआ।"

भाग्य देवता

अफ्रीका में कहीं एक मछियारा हुआ करता था। वह एक बड़ी झील में मछलियाँ पकड़ा करता था। मछलियाँ पकड़ने के लिए, वह टोकरे जैसे जालों का उपयोग किया करता था। वह अपनी तमेड़ पर उनको ले जाता, और जहाँ पानी कम होता वहाँ, उनको रस्सियों से बाँधकर उतार देता। क्योंकि वह रस्सियों के सिरों पर, काठ के टुकड़े बाँध देता था इसलिए उसको पता लग जाता कि जाल कहाँ कहाँ लगे थे। घर जाते समय, वह उन टोकरों को ऊपर खींचता, उनमें फँसी मछलियों को बेचता और अपना जीवन निर्वाह करता।

एक दिन मछियारे ने जालों को एक एक करके ऊपर खींचना शुरु किया। दो जालों में एक मछली भी न थी। तीसरे में एक केकड़ा था। परन्तु चौथा जाल जब उठाया, तो वह बहुत भारी-सा लगा। "ओह, मेरा भाग्य खिल उठा है। मेरी गरीबी गई समझो।" सोचते सोचते उसने उस जाल को तमेड़ पर खींचा। परन्तु उसमें एक सूखी बुढ़िया थी।

मछियारा का आश्चर्य यकायक घृणा में परिवर्तित हो गया। उसने बुढ़िया को फिर झील में धकेल देना चाहा। परन्तु उसने मछियारे से कहा—"मुझे फिर पानी में न धकेलो। मुझे तुम अपने साथ घर ले आओ। तुम्हें कोई हानि न होगी।"

"तुम्हें मैं अपने घर ले जाऊँ! वाह मैं अपना पेट ही मुश्किल से पाल पा रहा हूँ। तुम्हारा कैसे पोषण कर सकूँगा!" मछियारे ने कहा।

अफ्रीकी लोक कथा

परन्तु बुढ़िया उसके पैरों पड़ी। कुछ भी हो वह उसके साथ उसके घर गई। मछियारे ने खिझते हुए अपने भोजन का कुछ भाग उसे भी दिया। दोनों के खाना खाने के बाद मछियारे ने कहा—"तुमने कहा था कि मुझे कुछ लाभ होगा! साफ साफ बताओ, वह लाभ क्या है? सुनकर सन्तुष्ट होऊँगा।"

"कल शाम तक तुम पशुओं के झुन्ड के मालिक होने जा रहे हो। इसलिए पशुओं के लिए एक लम्बा चौड़ा बाड़ा तैयार कर लो।" बुढ़िया ने कहा।

मछियारे ने कई प्रश्न किये। परन्तु उस बुढ़िया ने कोई जवाब न दिया। "जो मैंने कहा है वह करो।" उसने कहा।

मछियारा गुनगुनाने लगा। परन्तु अगले दिन शाम तक काँटोंवाली झाड़ियों से, एक बड़ा बाड़ा तैयार किया। उसके खतम होते होते शाम होने लगी।

यह काम होते ही, झील की तरफ से, पशुओं की आवाज़ सुनाई दी। जल्दी ही एक बैल के पीछे कई गौ बछड़े झुन्ड बनाकर बाड़े में आये। इस तरह वे उस जगह लेट गये, जैसे वह झुन्ड वहीं रहता आया हो।
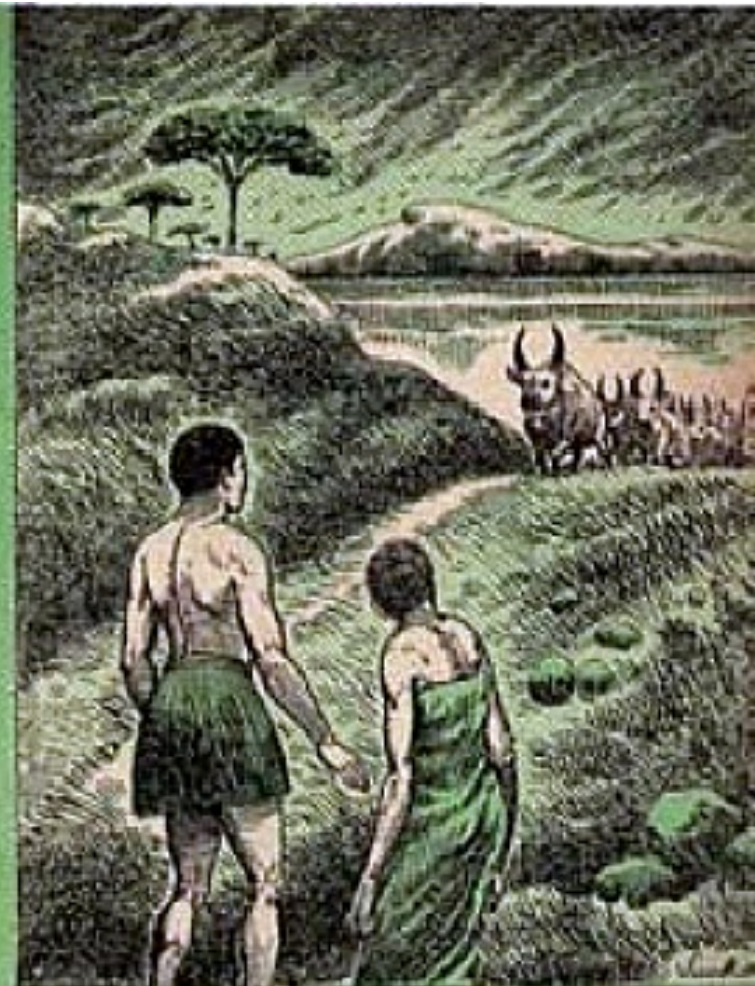
तब से मछियारे का जीवन बिल्कुल बदल गया। वह अब गरीब न रहकर बड़ा धनी हो गया था। आसपास के ईलाके में उससे बड़ा कोई धनी न था। उसने भूमि भी खरीद ली। शादी कर ली। अच्छा घर बार भी बसा लिया। वह भी उस तरफ के खानदानी आदमियों में शामिल कर लिया गया। अगर कोई किसी सलाह के लिए आता, तो दाढ़ी हिलाता कहा करता। "क्या मुझे यही काम है! कल आना। देखूँगा। खाली हाथ न आना।" वह यों घमंड के साथ बातें करता।

छः महीने बीत गये। एक दिन मछियारा कहीं गाँव में कोई सहभोज था, वहाँ भी गया। वहाँ उसने खूब खाया और खूब शराब पी। सहभोज खतम होने पर अन्धेरा हो गया। मछियारा झूमता झूमता, आया। घर में सब किवाड़ बन्द करके बुढ़िया गहरी नीन्द में थी।

"किवाड़ खोलो किवाड़, गिद्ध आया है। खोलो" वह चिलाया। पर कोई भी नहीं बोला। उसे गुस्सा आ गया। "यह क्या! ये इतने बेपरवाह हो गये हैं। वह बुढ़िया कहाँ गई, जिसे मैंने झील में से निकाला था! अबे बुढ़िया, उठकर किवाड़ खोल।" वह चिलाया। वह अभी चिला ही रहा था कि बुढ़िया किवाड़ खोलकर दरवाज़े पर खड़ी थी। उसने उसकी ओर देखकर कहा—"तुमने यूँ ही मुझे दुत्कारा है। मैं उन लोगों के साथ नहीं रहना चाहती जो उपकार करनेवालों को भूल जाते हैं। मैं कल ही अपनी जगह चली जाऊँगी।"

"वाह, जाती हो, तो जाओ। पिंड छूटेगा।" मछियारे ने कहा।

अगले दिन बुढ़िया उठी। बिस्तर लपेटा। बर्तन वगैरह साफ़ किये। घर में बुहारी दी, घर से उसने एक तिनका भी न लिया। बाहर जाकर, उसने बाड़े के दरवाज़े खोल दिये। वह फिर झील की ओर चलने लगी। पशु भी कतार में उसके पीछे गये और उसके साथ वे भी झील में चले गये। वे फिर न दिखाई दिये। मछियारे की फिर स्थिति ऐसी हो गई कि उसको मछली बेचकर जीने की नौबत आयी। उसका भाग्य चला गया।

सभी बहरे

एक गाँव में एक मठ था। उस मठ में, एक सिद्ध और उसका शिष्य रहा करते थे। एक दिन सिद्ध ने अपने शिष्य से कहा—"रे, तुम गाँव जाकर कुछ तम्बाखू ले आओ।"

शिष्य बहरा था। यह सोच कि गुरु ने उसको आचार लाने के लिए कहा था, वह गाँव गया। एक घर के सामने एक लड़की एक करघे के सामने बैठी थी।

"क्यों मठ के लिए कुछ आचार दोगी!" शिष्य ने पूछा।

वह लड़की भी बहरी थी। इसलिए शिष्य ने एक बात कही और उसने कुछ और समझा। "यह धोती जो करघे पर है। वह बिकाऊ ही है। हमारे लिए नहीं है।" उस लड़की ने कहा।

"अगर तुम काम पर हो, तो मैं ही अन्दर जाकर आचार ले आऊँगा।" यह कहकर बहरा शिष्य घर में घुस गया, रसोई खोजकर गया और जो आचार दिखाई दिया, उसे लेकर मठ चला गया।

करघे पर काम करनेवाली लड़की ताड़ गई कि शिष्य ने क्या किया था। वह अपनी माँ के पास गई। उसकी माँ तालाब के पास कपड़े धो रही थी।

"देख माँ, उस मठ में रहनेवाले लड़के ने क्या किया है! मैं करघे पर बैठी थी उसने आकर पूछा—"कपड़ा अपने लिए बुन रही हो, या बेचने के लिए।" मैंने कहा बेचने के लिए, इतने में वह घर में घुसा। बिना किसी से कहे, आचार लेकर चलता हुआ।" बहरी लड़की ने अपनी माँ से कहा।

नगेन्द्र

माँ ने अंगुली, नाक पर रखकर, अचरज में कहा—"क्यों? तू अभी से ही शादी के बारे में सोचने लगी? तुमसे बड़ी लड़कियों की अभी तक शादी नहीं हुई है। खैर जाने दो, मैं देख लूँगी कि आखिर बात क्या है। तुम घर जाकर अपना काम देखो, दुनियाँ हँसेगी। इस छोटी लड़की को अभी से क्यों शादी की पड़ी है? जाओ, जाओ" वह भी बड़ी बहरी थी।

लड़की जाकर, फिर करघे पर काम करने लगी। माँ कपड़े धोती धोती सोचने लगी। यदि सचमुच शादी के बारे में सोच रही है, तो शादी कर देना ही अच्छा था।

"कुछ भी हो, उसके पिता से इस बारे में बात कर लेना अच्छा है। देखें, क्या कहता है?" सोचकर वह कपड़े निचोड़कर घर चली गई।

उसका पति, रोज एक जगह बैठकर, छाज टोकरे आदि बनाता, बैठा करता। वह कपड़े सुखाकर, पति के पास गई। "देखा, लड़की शादी के लिए उतावला हो गई है। उसकी अभी शादी की उम्र नहीं हुई है। मैं तालाब के पास कपड़े धो रही थी कि भागी भागी आयी, जैसे आसमान गिर पड़ा हो, ज़िद करने लगी कि मेरी शादी जल्दी कर दो। मैंने कहा कि सोचेंगे, तुम जाकर पहिले अपना काम देखो। तुम्हारी क्या सलाह है? क्या उसकी शादी अभी कर दें?" उसने कहा।

पति ने अपना काम छोड़कर सब सुनकर कहा—"इसके लिए तुम्हारे इतनी देर बकने की क्या जरूरत है? गोल गोल टोकरे होते हैं और छाज चपटे चपटे।"

वह भी बहरा था।

सुग्रीव की बातें सुनकर राम ने कहा—

"तुम दोनों के बीच क्यों यों वैर है, मैं जानना चाहता हूँ और तुम दोनों की शक्ति के बारे में जानने के बाद ही तुम्हें सुख पहुँचाने का मार्ग बता सकता हूँ।

इस पर सुग्रीव ने यों कहा—"मैं और मेरा पिता, अपने भाई वाली को बड़े आदर की दृष्टि से देखते थे। पिता के मरने के बाद क्योंकि वाली बड़ा था इसलिए उसको राज्य मिला। दुन्दभि का लड़का मायावी नाम का राक्षस बड़ा पराक्रमशाली था। एक स्त्री के बारे में वाली और मायावी में झगड़ा हुआ। एक दिन आधी रात के समय, वह मायावी किष्किन्धा के द्वार पास आया। उसने गरजते हुए वाली को युद्ध के लिए ललकारा। वाली उठा और मायावी का घमंड दूर करने के लिए निकला। मैंने और स्त्रियों ने उसे बहुत रोका, परन्तु वह न रुका। यह देख कि वह अकेला जा रहा था, मैं भी उसके साथ गया। मायावी, मेरे भाई को देखते ही डर कर भागने लगा। हमने उसका पीछा किया। इतने में चन्द्रोदय हुआ। यह देख कि हम दोनों में फासला घटता जा रहा था, मायावी एक बिल में घुसा। उस बिल के सामने

घास बढ़ी हुई थी। उसके अन्दर जाना बड़ा कठिन था।

"वाली ने कहा कि वह मायावी को अन्दर जाकर मार देगा। उसने मुझे बाहर खड़ा रहने के लिए कहा। मैंने कहा कि मैं भी साथ आऊँगा, पर उसने मेरी एक न सुनी। वह उस बिल में घुस गया।"

मैं अपने भाई की प्रतीक्षा करता पूरा एक साल वहाँ खड़ा रहा। वाली का कहीं पता न था। मुझे सन्देह और भय हुआ कि वाली कहीं मर-मरा गया होगा। मेरा भय और भी बढ़ गया, जब मैंने देखा कि बिल से खून भी बहने लगा था। रोना भी सुनाई दिया। वह रोना मुझे वाली का-सा लगा। यह जानकर कि वाली मर गया था, मुझे दुःख हुआ। मैंने बिल पर बड़ा-सा पत्थर रख दिया, वाली का तर्पण करके मैं किष्किन्धा वापिस चला आया।

वाली की मृत्यु के बारे में मैंने कुछ न कहा। पर मन्त्रियों ने अनुमान कर लिया और आपस में मैंने विचार विमर्ष करके मेरा पट्टाभिषेक किया। जब मैं राज्य कर रहा था, तो वाली मायावी को मार कर वापिस चला आया।

"वाली को यह जानकर बड़ा गुस्सा आया कि मैं राजा बन गया था। मन्त्रियों को उसने जेल में डाल दिया। मुझे भी डाँट-डपट बताई। मैंने सगौरव उसको नमस्कार किया, उसने मुझे आशीर्वाद नहीं दिया। मैंने अपना मुकुट उसके पैरों के पास रखा। परन्तु उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ। मैंने उससे राज्य करने की प्रार्थना की। जो कुछ मैंने बिल के पास देखा और सुना था, वह बताया। यह भी बताया कि मैंने बिल के द्वार पर क्यों पत्थर रखा था। मैंने कहा कि मैंने गद्दी नहीं

चाही थी। राज्य के कल्याण के लिए, लिए, मन्त्रियों ने ही मुझे मुकुट पहिनाया था। तुम्हारी अनुपस्थिति में ही मैंने राज्य किया था, अब मैं तुम्हारा युवराजा बनकर काम करूँगा। मुझ पर गुस्सा न करो....मैंने उससे हाथ जोड़कर कहा।

वाली ने मेरी एक न सुनी। अपने प्रिय मन्त्रियों के सामने मुझे गालियाँ दीं। उसके बिल में घुसने के बाद, उसने बताया, मायावी दीखा ही न था। फिर उसने उसको और उसके बन्धुवों को मार दिया था। जब खून बहने लगा और जब वह उसकी बू न सह सका, तो उसने द्वार पर आकर मुझे बुलाया। मैंने उसकी प्रतीक्षा न की थी। उसे बिल में बन्द करने के लिए ही मैंने पत्थर रखा था, इस तरह की बातें उसने अपने मन्त्रियों से कहीं, इस तरह मेरी निन्दा करने के बाद उसने मुझे किष्किन्धा से भेज दिया और मेरी स्त्री का अपहरण कर लिया।

भाई द्वारा भगा दिये जाने के बाद, मैं इधर उधर मारा मारा फिरता रहा। आखिर मुझे ऋष्यमूक पर रहने का मौका मिला। किसी कारणवश वाली इस पर्वत पर पैर नहीं रख सकता। यद्यपि मेरी कोई गल्ती न थी, तो भी मुझे इतने कष्ट झेलने पड़े। मेरे कष्ट आप ही को दूर करने होंगे।

अब मैं वाली की शक्ति के बारे में बताऊँगा। वह सूर्योदय के पूर्व ही, चारों दिशाओं के समुद्रों को आसानी से पार कर आता है। पर्वत के शिखरों पर चढ़ कर, पत्थरों को गेन्द की तरह उछालकर पकड़ लेता है। बड़े-बड़े ठूँठों को वह आसानी से चीर फाड़ सकता है।

एक और कथा सुनाता हूँ। भैंसे के रूप में दुन्दभि नाम का एक बलशाली

राक्षस हुआ करता था। उसमें हज़ार हाथियों की शक्ति थी। उसने अपने बल के घमंड में समुद्र को युद्ध के लिए ललकारा। समुद्र ने मानव रूप में आकर दुन्दभि से कहा—"तुम जैसे युद्ध में प्रवीण व्यक्ति से युद्ध करने की शक्ति मुझ में तो नहीं है, अगर किसी में है, तो हिमवान में है। तुम उससे युद्ध करो।"

दुन्दभि हिमालय के पास गया। अपने सीगों से पेड़ों को उखाड़ते, चिल्लाते हुए उसने हिमालय को युद्ध के लिए बुलाया। "भाई, मैं तुमसे युद्ध नहीं कर सकता, क्यों मुझे तंग करते हो? यहाँ कितने ही मुनि तपस्या कर रहे हैं। इसलिए युद्ध नहीं हो सकता। किष्किन्धा में वाली नाम का वानर श्रेष्ठ है। वह तुमसे लड़ सकता है।" उसने कहा।

दुन्दभि किष्किन्धा के पास आया। वह ज़मीन को खुरों से कुरेदने लगा। उसके शोर को वाली न सह सका। वह अन्तःपुर की लड़कियों के साथ आया। उसने दुन्दभि से कहा—"अरे, मैं तुम्हें नहीं जानता। क्यों चिल्ला रहे हो? क्या जिन्दगी से प्यार नहीं है?" दुन्दभि ने क्रुद्ध होकर कहा—"अरे, स्त्रियों के सामने शेखियाँ मत मारो। हम से युद्ध करो। यदि अब न कर सको, तो रात आराम से काटो, अपने बन्दरों को जो कुछ देना है, वह दे दो। अपनी जगह एक और राजा को निश्चित कर दो। आखिरी बार सारी किष्किन्धा देखकर, कल सवेरे युद्ध के लिए आना।"

वाली दुन्दभि को देखकर हँसा। तारा आदि अन्तःपुर की स्त्रियों को भेजकर, इन्द्र की दी हुई सोने की माला डालकर, युद्ध के लिए आया। दोनों में भयंकर

युद्ध हुआ। आते ही वाली ने दुन्दभि के सींगों को पकड़कर, घुमा-घुमाकर, ज़मीन पर फेंक दिया। इस चोट से दुन्दभि के कानों से खून निकलने लगा। क्रमशः वाली का बल बढ़ता गया और दुन्दभि का घटता गया। आखिर वाली ने दुन्दभि को उठाकर ज़मीन पर पटक कर मार दिया। इस तरह मरे हुए दुन्दभि के शरीर को कोस भर दूर फेंका दिया। उस लाश से गिरती खून की बून्दें मातन्ग महामुनि के आश्रम में पड़ीं। खून की बून्दों को देखकर मातन्ग क्रुद्ध हुए और आश्रम से निकलकर आये। लाश को देखकर उन्होंने शाप दिया। "इस राक्षस की लाश को जिसने यहाँ फेंका है, अथवा जो उसके अनुचर हैं, वे इस वन में आते ही मर जायेंगे।"

"मातन्ग महामुनि का शाप सुनकर, वाली के अनुचर डरकर भाग गये और वाली से यह बात की। उन्होंने मिलकर, शाप वापिस लेने के लिए मातन्ग से कहा। पर उन्होंने वापिस न लिया, तब से वाली ऋष्यमूक की तरफ नहीं आता। यह जानकर मैं और मेरे मन्त्री यहाँ आकर

रह रहे हैं। वह जो टीला-सा दिखाई दे रहा है, वह ही दुन्दभि की लाश है।"

बाली के बल का एक उदाहरण देता हूँ। वह जो सात सागून के वृक्ष दिखाई दे रहे हैं उनको एक बाण से ही बाली मार सकता है। इतने शक्तिशाली को तुम कैसे मार सकोगे!" सुग्रीव की बातें सुनकर, लक्ष्मण ने हँसते हुए कहा—"राम के क्या करने पर तुम्हें विश्वास होगा!"

सुग्रीव ने लक्ष्मण से कहा—"मैं बाली के बल पराक्रम को जानता हूँ। उसने कभी अपनी हार नहीं मानी है। इसलिए ही मैं उसके डर से यहाँ रह रहा हूँ। मैं राम का पराक्रम तो नहीं जानता हूँ।"

राम दुन्दभि के लाश के पास गये। पैर की छोटी अंगुली से उसको ऊपर उठाया और उसे दस कोस दूर फेंक दिया।

यह देख सुग्रीव ने आश्चर्य करके कहा—"राम, जब बाली ने कोस भर दूर फेंका था, तब वह युद्ध करके बहुत थक चुका था। यही नहीं तब यह लाश बहुत भारी भी थी। अब सूख-सास कर हल्की हो गई है। इसलिए मैं तुम और बाली में भेद स्पष्टतः नहीं जान सकता। यदि तुमने इन सात सागून के पेड़ों में से बाण चलाया, तो मैं तुम दोनों की शक्ति को जान जाऊँगा।"

राम ने एक बाण लेकर सात पेड़ों में से बाण मारा, वह बाण पहाड़ पर गिरा। भूमि को तोड़कर, फिर आकर, राम के तरकश में आ गया।

यह देख सुग्रीव चकरा गया। "राम! बाली तो खैर बाली है। देवेन्द्र भी आपके सामने न टिक सकेंगे। आपकी मैत्री पाना मेरे लिये सौभाग्य की बात है। अब मेरे

शत्रु वाली को अभी ही मारिये।" उसने राम को साष्टान्ग नमस्कार किया। राम ने सुग्रीव का आलिंगन करके कहा—"आओ, अभी किष्किन्धा चलें। तुम हमसे पहिले जाकर वाली को युद्ध के लिए बुलाओ।"

राम लक्ष्मण, सुग्रीव आदि सब किष्किन्धा गये। बाकी सब पेड़ों के पीछे छुप-छुपा गये। केवल जंघिया बाँधकर, सुग्रीव इतनी ज़ोर से गरजा कि वाली को उसका गर्जन सुनाई पड़ सके।

भाई का गर्जन सुन, क्रुद्ध होता, वाली आया। भाई-भाई आपस में भिड़ पड़े। राम धनुष बाण लेकर, यही खड़े देखते रहे कि उनमें कौन वाली था और कौन सुग्रीव—वे जान न सके।

इस बीच सुग्रीव ने इतनी चोट खायी, कि सारे शरीर से खून बह रहा था। उसने थोड़ी देर इधर-उधर देखा, जब राम न दिखाई दिया, तो भागने लगा। वाली उसके पीछे भागा। सुग्रीव वाली से बचकर, ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचा। "जा, बच गया।" कहकर वाली वापिस लौटा।

इसके बाद राम, लक्ष्मण और हनुमान ऋष्यमूक पर्वत पर आये। सुग्रीव ने राम को देखकर, सिर झुकाकर कहा—"यह क्या काम है! क्या मुझे पिटवाने के लिए ही आपने मुझे वाली को युद्ध के लिए ललकारने के लिए कहा था! यदि आप पहिले ही बता देते कि आप वाली को नहीं मार सकते थे, तो मैं यहाँ से जाता ही नहीं।"

१८. माटर हार्न

स्विजरलेन्ड और इटली के बीच में अल्प्स पहाड़ों में यह शिखर यूरुप की सब से ऊँची चोटी है। इसकी ऊँचाई १४,७८० फीट है। १४, जुलाई १८६५ में सर्व प्रथम एडवर्ड ह्विम्पर और उसके साथी इस चोटी पर पहुँचे।
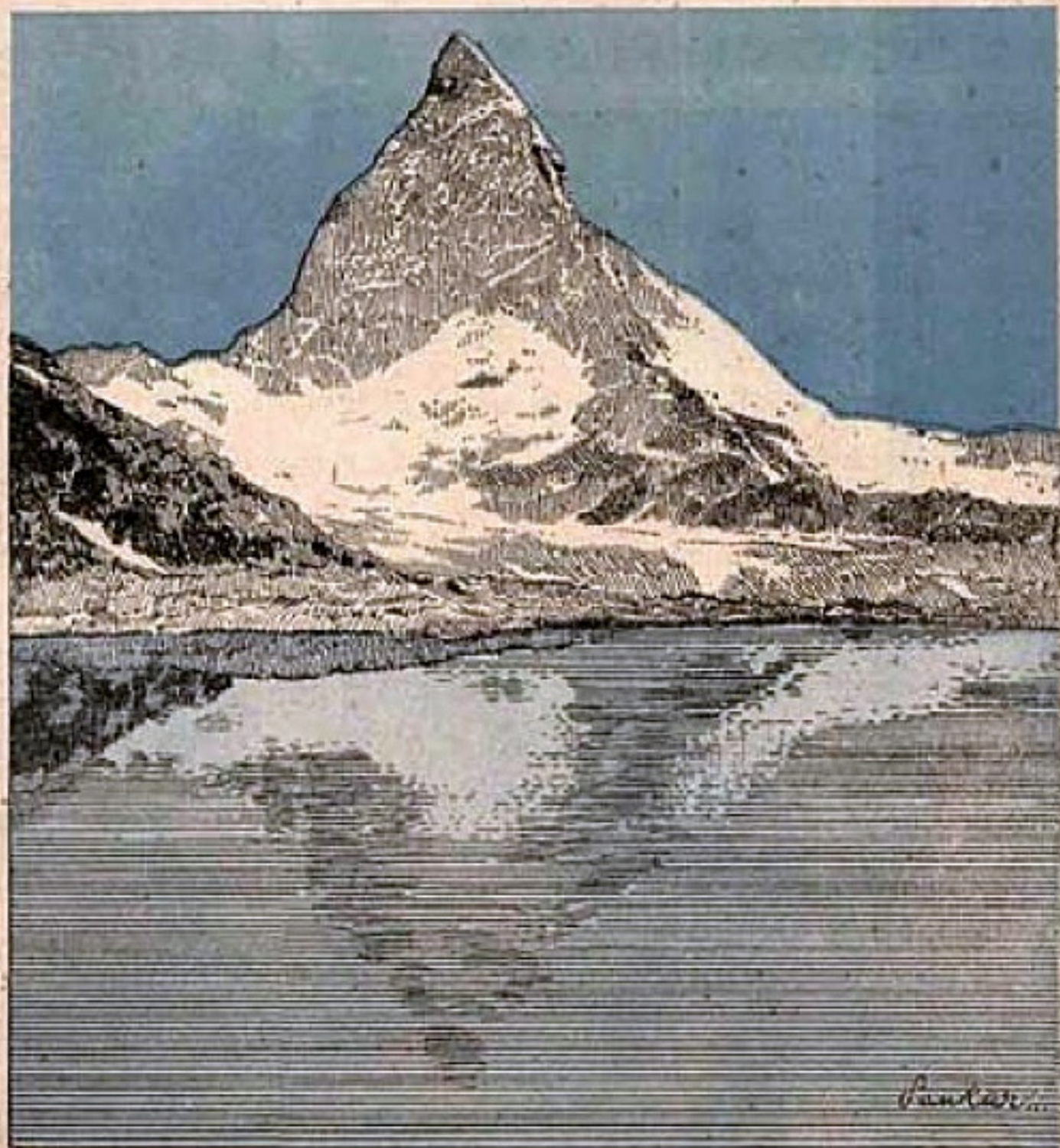
१. शैलेशकुमार शाह, पटना

क्या आप चन्दामामा गुजराती में भी छापते हैं?

हाँ।

२. निर्मलकुमार पंथेल, खरगपुर

आप "भीम की कथा" के खतम होने पर कौन-सी कहानी छापेंगे?

अभी इसे खतम तो होने दीजिये। जल्दी क्या है?

३. हीरा वल्लभ थयलिमाल, बुलन्द शहर

क्या आप "समाचार वगैरह" और "चित्र कथा" नामक स्तम्भ फिर खोलेंगे?

हाँ, कुछ ऐसे स्तम्भ ज़रूर खोलेंगे, पर कब! यह नहीं कह सकते!

४. रमेशकुमार सोनी, पेन्ड्रा रोड

आप विज्ञान सम्बन्धी लेख "चन्दामामा" में क्यों नहीं देते?

देते हैं। फिलहाल एक अलग पृष्ठ दिया जा रहा है।

भारत का इतिहास कब तक "चन्दामामा" में चलता रहेगा?

जब तक भारत का इतिहास खतम नहीं हो जायेगा।

५. सुभ्राता चटर्जी, नागपुर

क्या आप "चन्दामामा" में अकबर और बीरबल के चुटकले छाप सकते हैं?

छाप चुके हैं और छापेंगे।

६. गिरीशचन्द्र अग्रवाल, राजस्थान

चन्दामामा के मुख्य पृष्ठों पर अमर महान पुरुषों के रंगीन चित्र क्या सम्भव हैं?

मुख्य पृष्ठों का सम्बन्ध अन्दर प्रकाशित कहानियों से है और आपने देखा होगा कि वे भी धारावाहिक हैं।

७. जगन्नाथ अग्रवाल, रामसिंह नगर

"विवेकानन्द का बचपन" की तरह भविष्य में भी महान आदमियों का बचपन प्रकाशित करेंगे?

हाँ, जब जब वह सम्भव होगा।

८. एस. एम. तिवारी, झरसुगुड़ा

क्या यह सच है कि आप "चन्दामामा" में धारावाहिक कथा बन्द कर रहे हैं?

नहीं, बिलकुल झूठ। हम नहीं बन्द करेंगे।

९. कीता जुल्का, शिमला

क्या आप नया कालम "संसार के बड़े मनुष्य" शुरु करके चन्दामामा को बच्चों के लिए ज़्यादा लाभदायक नहीं बनायेंगे?

सुझाव अच्छा है। हम विचार कर रहे हैं।

१०. कुलवन्तसिंह चमाह, झाँसी

क्या पुस्तकाकार "विचित्र जुड़वा" में भी "चन्दामामा" की भाँति बहुरंगीन चित्र हैं?

हैं।

११. पवनकुमार मंगला, मुक्तसर

क्या आप चन्दामामा में थोड़ी थोड़ी कहानी देने की बजाय पूरी कहानी नहीं छाप सकते जिससे हमें भी आनंद प्राप्त होगा।

पूरी कहानी देने से अन्य कहानियों को स्थान नहीं मिलता। इसलिए बड़ी कहानियाँ खंड खंड में दी जाती हैं।

Photo by Ranbir S. Bakshi
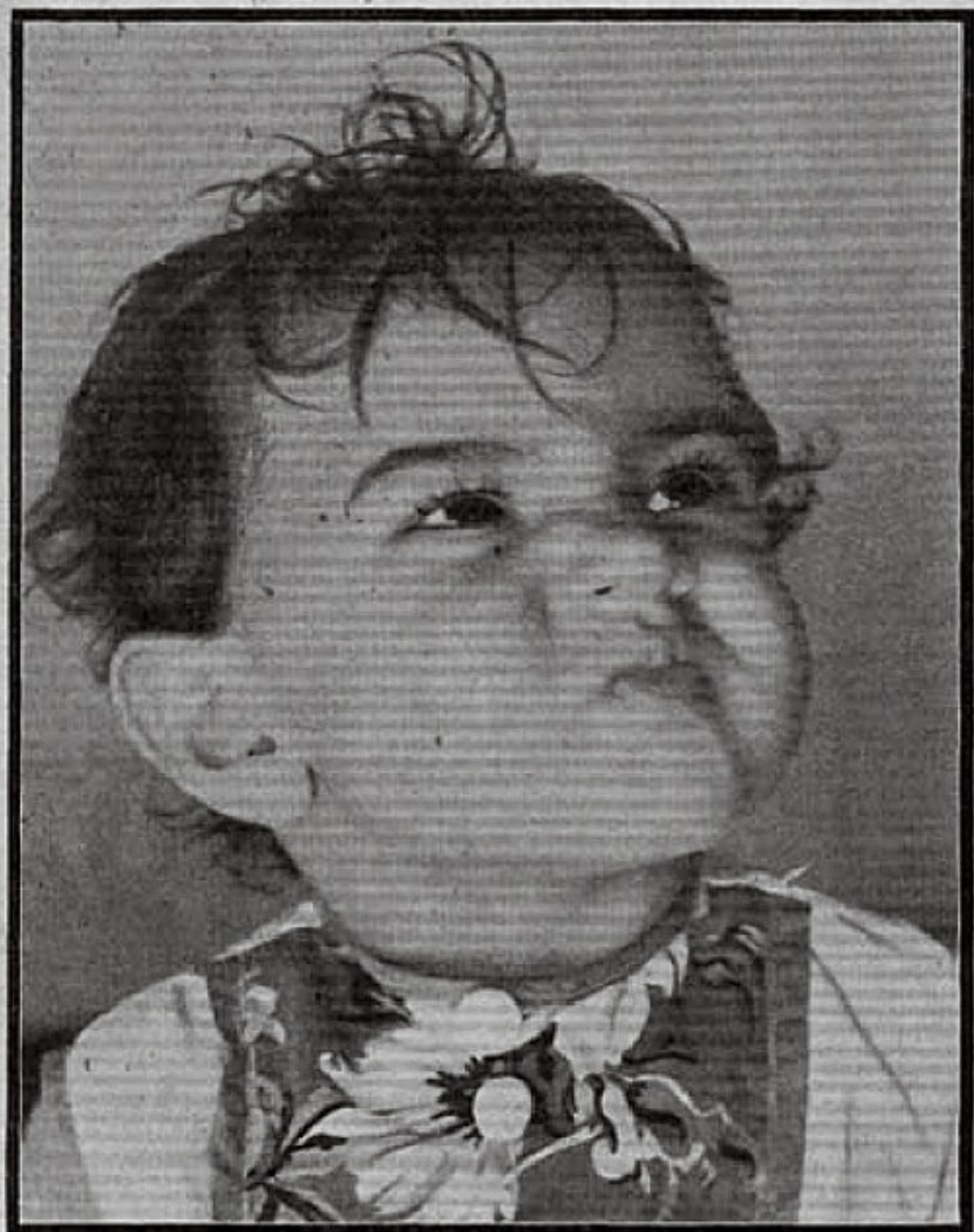
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

शैशव नटखटता दिखलाता !

प्रेषक :
विष्णु चैतन्य - जालंधर

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

यौवन शरमाता मुसकाता !!

प्रेषक :
विष्णु चैतन्य - जालंधर

ग्रहणों के बारे में

★ भूमध्य रेखा से देखने पर सम्पूर्ण सूर्यग्रहण ज्यादह देर तक दिखाई देता है। यह साढ़े सात मिनट से अधिक नहीं होता। भूमध्य रेखा, जितनी दूर हम जाते हैं, उतनी ही इसकी अवधि कम होती जाती है। सूर्य का ग्रहण और उसकी मुक्ति करीब साढ़े चार घंटों में पूरे हो जाते हैं।

★ सम्पूर्ण चन्द्रग्रहण एक घंटा पचास मिनिट से अधिक नहीं होता। इसका ग्रहण और मुक्ति चार घंटे में समाप्त हो जाती है।

★ वर्ष में, कम से कम दो बार सूर्यग्रहण होता है। पाँच वर्ष में, एक वर्ष में सम्भव है कि चन्द्रग्रहण हो ही न।

★ सूर्य चन्द्रग्रहण कुल मिलाकर साल में ७ हो सकते हैं। यह अधिक से अधिक संख्या है और कम से कम २—दो सूर्यग्रहण ही हैं।

★ उत्तरार्ध भूगोल में रहनेवालों को सूर्यबिम्ब पर से, चन्द्रबिम्ब दायें से बायीं ओर जाता दिखाई देता है। दक्षिणार्ध में, बायीं ओर से दायीं ओर जाता दिखाई देता है।

★ चन्द्रग्रहण के समय चन्द्रमा भूमि की छाया में बायीं ओर से प्रवेश करता उत्तरार्ध में, और दाईं ओर से दक्षिणार्ध में दिखाई देता है।

★ प्रति सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण १८ वर्ष १० रोज, आठ घंटे को फिर आता है। ये चार हजार वर्ष, बेबिलोनियन जानते थे। इस आधार पर वे आनेवाले ग्रहणों का अनुमान करते थे।

★ हर चन्द्रग्रहण के अनुपात में तीन सूर्यग्रहण होते हैं। परन्तु हम सूर्यग्रहणों की अपेक्षा, चन्द्रग्रहण ही अधिक देखते हैं। कारण यह है कि सूर्य के बीच में आनेवाले चन्द्र की छाया भूमि के एक सिरे पर थोड़ी देर के लिए ही पड़ती है। उस सिरे में रहनेवालों को ही वह सूर्यग्रहण दिखाई देता है। चन्द्रग्रहण के समय, चन्द्रमा जब भूमि की छाया में आता है, तो जहाँ जहाँ चन्द्रमा दिखाई देता है, वहाँ वहाँ ग्रहण भी दिखाई देता है। यही कारण है कि सम्पूर्ण सूर्यग्रहण को देखने के लिए वैज्ञानिक, आवश्यक उपकरणों के साथ हजारों मील दूर जाते हैं।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९६३ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जून १९६३ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

जून – प्रतियोगिता – फल

जून के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : शैशव नटखटता दिखलाता !

दूसरा फ़ोटो : यौवन शरमाता मुसकाता !!

प्रेषक : विष्णू चैतन्य,
२२ क्लाइव रोड, मुहल्ला नं. १३ जालंधर छावनी (पंजाब)

महाभारत

यज्ञ का अश्व प्राग्ज्योतिष से सिन्धु देश की ओर निकला। उसके साथ आनेवाले अर्जुन का सिन्धी वीरों ने मुकाबला किया। क्योंकि अर्जुन ने उनके नेता, सैन्धव को मारा था, इसलिए वे अर्जुन पर बहुत क्रुद्ध थे। इसलिए उन्होंने अर्जुन को घेरकर उसपर बाण वर्षा की। अर्जुन शुरु शुरु में घायल तो हुआ, तो भी उसने वीरतापूर्वक युद्ध किया। थोड़ी देर बाद सिन्ध के वीरों की शक्ति कम हुई।

उस समय दुश्शला अपने पोते को रथ में बिठाकर, उस जगह आयी जहाँ अर्जुन था और जोर से रोयी। सैन्धव की पत्नी और धृतराष्ट्र की लड़की दुश्शला को अर्जुन ने आश्वासन दिया और उसके आगमन का कारण पूछा।

"भाई, यह मेरे लड़के सुरथ का लड़का है। जितना तुम्हारे लिए परीक्षित है, उतना ही इसे मानकर इस पर कृपा करो, इसने पिता से सुन रखा है कि उसके पिता को तुमने मारा था। यह जान कि घोड़े के साथ तुम आ रहे थे उसने अपने प्राण छोड़ दिये। जो कुछ मेरे पति ने तुम्हारे प्रति किया था, उसे भूल जाओ। इन सिन्धु वीरों को भी माफ कर दो" दुश्शला ने कहा। अर्जुन ने उसको गले लगाकर घर भेज दिया।

वहाँ से घोड़ा मणिपुर राज्य की ओर गया। मणिपुर का राजा, बभ्रुवाहन, यह जानकर कि उसका पिता आ रहा था अर्जुन से मिलने आया। अर्जुन इसपर सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने कहा—"मैं सायुध हूँ। युद्ध के लिए सन्नद्ध हूँ। तुम्हारा मुझ से इस तरह मिलना, मुझे वीरोचित नहीं मालूम होता। तब नागलोक से उलूपि ने आकर बभ्रुवाहन से कहा—"बेटा, मैं तेरी माँ हूँ। जैसे तुम्हारा पिता चाहता है, वैसे ही तुम अपना पराक्रम दिखाकर, उनको सन्तुष्ट करो।" उसकी बात सुनकर, बभ्रुवाहन जो तब तक सिर झुकाये खड़ा था, अर्जुन से युद्ध करने के लिए तैयार हो गया।

सच कहा जाय तो बभ्रुवाहन उलूपि का लड़का न था। उसकी माँ चित्रांगदा थी। उलूपि एक समय, जब अर्जुन तीर्थ यात्रा कर रहा था, तो उसको नागलोक कुछ समय के लिए ले गई थी और उससे उसको ऐरावत नाम का लड़का हुआ था। अर्जुन चला गया था, पर अर्जुन को उसने प्रेम करना न छोड़ा था। गंगा के तट पर उसने वसुओं को सोचते सुना था कि अर्जुन को शिखण्डी की आड़ से भीष्म को मारने के लिए कुछ दिन नरक जाना होगा। यह जानकर कि यदि अर्जुन अपने लड़के से युद्ध करेगा, तो नरक से बच सकेगा उसने उस समय पिता से युद्ध करने के लिए पुत्र को प्रेरित किया।

Printed by B. NAGI REDDI for the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

माला सिन्हा से सुनिये एक रहस्य की बात...

'लक्स से मेरा रंगरूप दमक उठता है'

लक्स

टॉयलेट साबुन

चित्रतारिकाओं का शुद्ध, मुलायम सौंदर्य साबुन

इंद्रधनुष के ४ रंगों में और सफ़ेद!

LTS. 145-77 JH

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन